केंद्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

सेवाकालीन प्रशिक्षण स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी (प्रथम चरण)

In Service Course for PGT Hindi (First Spell)

17.05.2017 – 28.05.2017

प्रतिवेदन/ Report

श्री रनवीर सिंह

उपायुक्त एवं निदेशक

केविसं शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

डॉ.संध्या शर्मा

प्राचार्य,के.वि.सै. 31 चंडीगढ़

कोर्स निदेशक

श्री सुरेश कुमार

उप प्राचार्य,के वि उभावल

सह कोर्स निदेशक

आयोजन स्थल : के वि सं शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

संरक्षक / PATRON

श्री संतोष कुमार मल्ल (भा.प्र.से.) आयुक्त के वि सं नई दिल्ली		SANTOSH KUMAR MALL (IAS) COMMISSIONER KVS NEW DELHI
श्री जी. के. श्रीवास्तव (भा.प्र.से.) अपर आयुक्त (प्रशासन) केविसं नई दिल्ली		SH. G.K. SHRIVASTAV (IAS) ADDITIONAL COMMISSIONER (ADMIN.) KVS NEW DELHI
श्री यू एन खवारे अपर आयुक्त (शैक्षिक) केविसं नई दिल्ली		SH. U N KHAWARE ADDITIONAL COMMISSIONER(ACAD.) KVS NEW DELHI
डॉ. शचीकांत संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण) केविसं नई दिल्ली		DR. SHACHI KANT JOINT COMMISSIONER (TRAINING) KVS NEW DELHI
श्री एम. अरूमुगम संयुक्त आयुक्त (वित्त) केविसं नई दिल्ली		SHRI M ARUMUGAM JOINT COMMISSIONER (FINANCE) KVS NEW DELHI
डॉ.वी.विजयलक्ष्मी संयुक्त आयुक्त (शिक्षा) केविसं नई दिल्ली		DR. V VIJAY LAXAMI JOINT COMMISSIONER (ACAD.) KVS NEW DELHI
डॉ0 ई. प्रभाकर संयुक्त आयुक्त (कार्मिक) केविसं नई दिल्ली		DR. E. PRABHAKAR JOINT COMMISSIONER (PERSONNEL) KVS NEW DELHI
श्री एस विजय कुमार संयुक्त आयुक्त (प्रशासन) केविसं नई दिल्ली		SHRI S. VIJAYA KUMAR JOINT COMMISSIONER (ADMINISTRATION) KVS NEW DELHI
कर्नल यू.के.शर्मा, ओएसडी (रक्षा) केविसं नई दिल्ली		COL. U.K. SHARMA OSD (DEFENCE) KVS NEW DELHI

संदेश

शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह विभिन्न विषयों का संगम है।यह कला जगत को भी अपने भीतर समेटे हुए है।एक शिक्षक के रूप में काम करने की पहली शर्त है कि हम अपने दिल और दिमाग को खुला रखें और समाधान खोजने के लिए तत्पर रहें।इस क्षेत्र में काम करने वालेअन्य लोगों के अनुभवों से लाभ उठाने और उनके साथ अपने अनुभवों को साझा करने के लिए सदैवतत्पर हों ताकि शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों को साझा प्रयास से हासिल किया जा सके।अगर हम इस क्षेत्र में काम करते हैं तो भाषा को एक संसाधन के रूप में देखना होगा। हमें अलग अलग विषयों और भाषाओं से मिलने वाली जानकारी से लाभ उठाने के लिए तैयार रहना होगा। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो हमारे जीवन को एक नयी विचारधारा,नया सवेरा देता है, ये हमें एक परिपक्व समाज बनाने में मदद करता है। यदि शिक्षा के उद्देश्य सही दिशा मे हों तो ये इन्सान को नए नए प्रयोग करने के लिए उत्साहित करते हैं। शिक्षा और संस्कार साथ-साथ चलते हैं, या कहा जाए तो एक दूसरे के पूरक हैं।शिक्षा हमें संस्कारों को समझने और बदलती सामाजिक परिस्थियों के अनुरूप उनका अनुसरण करने की समझ देता है।

केंद्रीय विद्यालय संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र की चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों हेतु एक सुविचारित और सुव्यवस्थित प्रशिक्षण नीति तैयार की है।दिनांक 17 से 28 मई 2017 तक स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी हेतु होने वाला सेवाकालीन प्रशिक्षण भी इसी नीति का हिस्सा है।इस प्रशिक्षण का एक उद्देश्य यदि प्रतिभागियों के विषय संबंधी ज्ञानको अद्यतन करना है तो दूसरी ओर व्यक्तित्व विकास,सम्प्रेषण कौशल,पर्यावरण,शिक्षा,किशोर शिक्षा कार्यक्रम,जीवनमूल्य,जीवन कौशल आदि विषयों के माध्यम से शिक्षा को राष्ट्रीय,सामाजिक व पर्यावरण जैसे विषयों से जोड़ना भी है । इसके साथ ही सभी प्रतिभागी अपने–अपने अनुभवों के माध्यम से एक दूसरे की शिक्षण,कक्षा प्रबंधन आदि समस्याओं का समाधान भी उपलब्ध करवा सकते हैं।

मैं केंद्रीय विद्यालय संगठन,मुख्यालय नई दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने के.वि.सं शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान,चंडीगढ़ को यह अवसर दिया कि वह इस प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों से जुड़कर शिक्षा जगत में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन कर सके।

आशा करता हूँ कि सभी प्रतिभागी अपने–अपने विद्यालयों में जाकर विद्यार्थी,अभिभावक और शिक्षक की त्रिवेणी के माध्यम से शिक्षा को प्रासंगिक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ !

रनवीर सिंह
उपायुक्त एवं निदेशक

पाठ्यक्रम निदेशक की कलम से

विद्यार्थी राष्ट्र की अमूल्य निधि है। राष्ट्र के विकास में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान है ।विद्यार्थी को राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में तैयार करने में न केवल शिक्षा अपितु संस्कार भी अत्यावश्यक है। इस हेतु उसे एक ऐसा परिवेश उपलब्ध करना आवश्यक है,जहाँ नैतिक एवं मानवीय मूल्यों तथा जीवन दर्शन से साक्षात्कार कर सके। यह परिवेश उसके पारिवारिक सदस्यों,शिक्षकों एवं विद्यालय के द्वारा उपलब्ध कराना अपेक्षित है। समुचित शब्दों में शिक्षक उसे ही कहा जाता है जो सदैव विद्यार्थी बना रहे अर्थात् जो सदैव अध्ययन में संलग्न रहे।अतः यह सत्य है कि शिक्षक भी जिज्ञासु होता है तथा सदैव सीखने को तत्पर रहता है ।अपने विद्यार्थी के लिए विषयवस्तु को अधिकाधिक बोधगम्य बनाने हेतु शिक्षक नित नवीन नवाचारों अभिनव प्रयोगों को करने में तत्पर रहता है। विद्यार्थी की सफलता में ही अपने कार्य की परिणति मानकर परमानन्द प्राप्त करता है।

इसी भाव को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपने शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से नवाचारों,क्रियाविधियों,शिक्षण तकनीकों को साझा करते हुए अध्ययन-अध्यापन में आ रही समस्याओं का समाधान एवं अधिगम के नूतन विकल्पों की तलाश प्रतिभागियों के सहयोग से करता है ।साथ ही व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षकों के जरिए विद्यार्थियों में भी सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु प्रयास किया जाता है।जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षकों के साथ - साथ विद्यार्थी को पूर्ण सक्षम,सुखी और स्वस्थ बनाने के साथ श्रम और बुद्धि का उपयोग करते हुए महान उपलब्धियों को अर्जित करने में सहायक बनना है। विशेषत: भाषा शिक्षक के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर विद्यार्थियों को लाभान्वित करना प्रमुख है।

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के उच्चाधिकारियों ने मेरी कार्यशैली पर विश्वास व्यक्त करते हुए सत्र 2017-18 के सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी)को आयोजित करवाने तथा पाठ्यक्रम निदेशक के रूप दायित्व प्रदान किया।मेरा भरसक प्रयास रहा कि प्रतिभागी शिक्षक साथी प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापन के क्षेत्र में नवीन स्फूर्ति एवं ऊर्जा के साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण में सहायक सिद्ध हो सके।

इस प्रशिक्षण शिविर की सार्थक सफलता के लिए में श्री रनवीर सिंह जी उपायुक्त एवं निदेशक के.वि.सं. शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़, की हार्दिक आभारी हूँ, जिनके मार्गदर्शन में हम सफलता के सोपान तय कर सके।

मैं स्वयं एवं मेरी टीम की ओर से सभी प्रतिभागी शिक्षकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ और विश्वस्त हूँ कि के.वि.सं. की कसौटी पर हमारे प्रयास खरे उतरेंगे।

डॉ संध्या शर्मा

प्राचार्य एवं पाठ्यक्रम निदेशक

केंद्रीय विद्यालय संगठन

शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

सेवाकालीन प्रशिक्षण स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी (प्रथम चरण)

दिनांक 17.05.2017 से 28.05.2017 तक

श्री रनवीर सिंह
उपायुक्त
केविसं, शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़

कोर्स निदेशक
डॉ. (श्रीमती) संध्या शर्मा
प्राचार्य के.वि. सै. 31 चंडीगढ़

सह कोर्स निदेशक
श्री सुरेश कुमार
उप प्राचार्य के.वि.उभावल

संसाधक	संसाधक
श्रीमती सुनीता गुसांई सह प्रशिक्षक (हिंदी) केविसं,शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़	डॉ. मनोज गुप्ता स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी के वि क्र.1 कोटा

संयोजिका / Coordinator

श्रीमती सुनीता गुसांई, सह प्रशिक्षक (हिंदी) केविसं,शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़
MRS. SUNITA GUSAIN, PGT HINDI KVS ZIET CHANDIGARH

रिपोर्ट संकलन एवं संपादन

श्रीमती सुनीता गुसांई, सह प्रशिक्षक (हिंदी) केविसं,शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़	डॉ. मनोज गुप्ता स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी के वि क्र.1 कोटा

आयोजन स्थल : केविसं,शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान सै. 33 सी चंडीगढ़

विषय सूची

क्र. सं	विषय
1.	मुख पृष्ठ
2.	संरक्षक
3.	संदेश
4.	समय सारिणी
5.	प्रतिभागियों की सूची
6.	समूह
7.	अतिथि वक्ता
8.	प्रतिवेदन
9.	लेख
10.	व्याख्यान सार
11.	पाठ योजना
12.	पटकथा / नाट्यरुपांतरण
13.	पुस्तक समीक्षा
14.	गतिविधियों की झलक

के वि सं शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चंडीगढ़
स्नातकोत्तर शिक्षक -हिन्दी-सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यचर्या समय सारिणी प्रथम चरण
दिनांक 17.05.2017 से 28.05.2017 तक

दिनांक	9:00- 9:30	9:30-11:00		11:15-13:00		14:00-15:45		16:00-17:30
17.05.2017	पंजीकरण	• उद्घाटन • सेवाकालीन प्रशिक्षण के उद्देश्य : डॉ.संध्या शर्मा,कोर्स निदेशक • अध्यक्षीय संबोधन : श्री रनवीर सिंह उपायुक्त	चाय का अंतराल 11:00-11:15	• सेवा कालीन प्रशिक्षण की उपादेयता • समूह विभाजन	भोजनावकाश 13:00-14:00	पूर्व परीक्षा	चाय का अंतराल 15:45-16:00	पूर्व परीक्षा एवं चाय का अंतराल
18.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	• विषय समिति बैठक डॉ. संध्या शर्मा ,कोर्स निदेशक • पाठ्यक्रम श्रीमती सुनीता गुसांई,संसाधिका		कहानी नाट्यरुपांतरण एवं मंचन श्री चक्रेश कुमार अतिथि वक्ता		कविता शिक्षण डॉ.कुसुम अतिथि वक्ता		समुह कार्य विभाजन एवं निष्पादन
19.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	पत्रकारिता : सैद्धांतिक पक्ष श्री सुरेश कुमार,सह.को.निदेशक		इंट्रेक्टिव बोर्ड का प्रयोग श्री एस एल यादव		आदर्श पाठ प्रतिभागी		समूह कार्य कम्प्यूटर पर कार्य
20.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	• शिक्षक के गुण श्री एम एस चौहान , उपायुक्त • सेवा पुस्तिका सुश्री रचना कुमारी,स.अनु.अधिकारी		ग़ज़ल शिल्प और संरचना डॉ. राजेश मोहन अतिथि वक्ता		आदर्श पाठ प्रतिभागी		समूह कार्य कम्प्यूटर पर कार्य
21.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	व्यक्तित्व विकास डॉ. संध्या शर्मा , कोर्स निदेशक		पत्रकारिता का क्षेत्र डॉ. राजकुमार अतिथि वक्ता		आदर्श पाठ प्रतिभागी		समूह कार्य कम्प्यूटर पर कार्य
22.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	हिंदी विषय में विद्यार्थियों की रुचि डॉ. मनोज गुप्ता, संसाधक प्रिंट मीडिया श्री सुरेश कुमार,सह कोर्स निदेशक		आदर्श पाठ प्रतिभागी		सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 श्रीमती इंदिरा मुद्गल सहायक आयुक्त आदर्श पाठ प्रतिभागी		समूह कार्य कम्प्यूटर पर कार्य

23.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	• प्रभावशाली लोगों की सात आदतें श्री रनवीर सिंह उपायुक्त • बाल शोषण श्रीमती शाम चावला,प्राचार्य		किशोर शिक्षा कार्यक्रम श्री एस पी सिंह		किशोर शिक्षा कार्यक्रम पर प्रश्नोत्तरी मध्य सत्र परीक्षा		चर्चा : चार्ली चैप्लिन यानी हम सब प्रतिभागी
24.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	• साहिर लुधयानवी पर फ़ीचर , श्री सुरेश कुमार सह को. निदेशक • शिक्षण में आई सी टी का प्रयोग श्रीमती सुनीता गुसांई संसाधिका		सम्प्रेषण कौशल डॉ.संध्या शर्मा कोर्स निदेशक		शिक्षकों हेतु आचार संहिता श्री रनवीर सिंह उपायुक्त		चर्चा : सहज स्वीकारा है प्रतिभागी
25.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	बैक टू बेसिक सुश्री टी रुक्मणि सहायक आयुक्त		शिक्षण विधियाँ डॉ.संगीता पंत अतिथि वक्ता		अनुशासनात्मक कार्यवाही श्री रनवीर सिंह उपायुक्त		• अवकाश संबंधी नियम श्री एन एल सिंगला • शैक्षिक भ्रमण हेतु चर्चा
26.05.2017	शैक्षिक भ्रमण	शैक्षिक भ्रमण		शैक्षिक भ्रमण		शैक्षिक भ्रमण		शैक्षिक भ्रमण
27.05.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	एच आई वी एड्स श्री एस पी सिंह सह प्रशिक्षक जीव विज्ञान		• परीक्षा • पुस्तकालय हेतु पुस्तकें श्री सुरेश कुमार		सृजनात्मकता श्री सुरेश कुमार, सह को.निदेशक		• जामुन का पेड़ : मंचन • नाटक की समीक्षा
28.08.2017	प्रार्थना सभा सत्र योजना पर चर्चा	अपठित बोध प्रतिनभागियों द्वारा चर्चा		पुस्तक समीक्षा प्रतिनभागियों द्वारा चर्चा		• कविता पाठ की रिकॉर्डिंग डॉ. मनोज गुप्ता • प्रशिक्षण के दौरान निर्मित सामग्री पर चर्चा		समापन समारोह

चाय का अंतराल 11:00-11:15

भोजनावकाश 13:00-14:00

चाय का अंतराल 15:45-16:00

केंद्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण(प्रथम चरण) 17 से 28 मई 2017
प्रतिभागी सूची

क्र.	नाम	पदनाम	केंद्रीय विद्यालय	संभाग	संपर्क सूत्र	ई पता
1.	शिवलता सोलंकी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	ए एफ एस समाना	अहमदाबाद	8140794654	shivlatakvs@gmail.com
2.	रजनी मिश्रा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.1 इच्छानाथ सूरत	अहमदाबाद	9173563069	rashika.mishra@gmail.com
3.	सुरेश चंद्र बैरवा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	द्वारका	अहमदाबाद	9723799728	scraja100@gmail.com
4.	श्री मुकेश कायल	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.3 ए एफ 2 जामनगर	अहमदाबाद	9427261821	kayalmukesh@gmail.com
5.	श्री एच आर शर्मा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	शिमला	चंडीगढ़	8894350323	hariramsharma1233@gmail.com
6.	श्रीमती सीमा शुक्ला	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2 डी एम ड्ब्ल्यू पटियाला	चंडीगढ़	8901582316	lotusmimu86@gmail.com
7.	डॉ.रमा रानी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र 2 ए एफ एस आदमपुर	चंडीगढ़	9465394077	rama.chakshu@gmail.com
8.	डॉ.पंकज कपूर	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	जतोग	चंडीगढ़	9418516209	pankajkapoor0712@gmail.com
9.	श्री जोगिंदर पाल डोगरा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	भनाला	चंडीगढ़	8894724239	yogidogra@rediffmail.com
10.	श्री के जी शुक्ला	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	बद्दोवाल कैंट	चंडीगढ़	9417416078	k.gsukhla18@gmail.com
11.	श्री पी सी विश्वकर्मा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2 हलवारा	चंडीगढ़	8699079652	pcv_ank123@rediffmail.com
12.	श्रीमती कंचन	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.1 अंबाला छावनी	चंडीगढ़	8813991869	kanchan.singh06@gmail.com
13.	सुश्री मीनू बाला	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.1 चंडीमंदिर छावनी	चंडीगढ़	9417250953	balameenu370@gmail.com
14.	श्री अग्र चंद	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2 आर सी एफ हुसैनपुर	चंडीगढ़	9462003330	agarchand82@gmail.com
15.	श्री रंजीत कुमार	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	सौरखंड	देहरादून	9838381936	rnjt2013@gmail.com
16.	श्री सुरेश कुमार पाटीदार	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	एनएचपीसी धारचुला	देहरादून	9410929799	suresh.patidar87@gmail.com

केंद्रीय विद्यालय संगठन , शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़ स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण(प्रथम चरण) 17 से 28 मई 2017 प्रतिभागी सूची						
क्र.सं.	नाम	पदनाम	केंद्रीय विद्यालय	संभाग	संपर्क सूत्र	ई पता
17.	श्री बी के पांडेय	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2 रुड़की	देहरादून	9412956529	pandey.bipin67@gmail.com
18.	श्रीमती रीता देवी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	बी एच ई एल हरिद्वार	देहरादून	9458586866	ritagunjansk@gmail.com
19.	श्री आनंद स्वरूप	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	कौसानी	देहरादून	8376422386	ramanand198544@gmail.com
20.	श्री श्रीरंजन द्विवेदी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	एलबीएसएनएए मसूरी	देहरादून	8181000567	1974srd@gmail.com
21.	श्रीमती अनीता गुप्ता	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	काशीपुर	देहरादून	9411394724	anitagupta3024@gmail.com
22.	श्री रघुवीर प्रसाद	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	आई.वी.आर.आई. मुक्तेश्वर	देहरादून	9829367476	kakasinghal@gmail.com
23.	श्रीमती नीलम सरीन	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2एस ओ आई ,एचबीके देहरादून	देहरादून	9411139930	nsarin60@gmail.com
24.	श्रीमती तारा जोशी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	एफ आर आई देहरादून	देहरादून	9410189575	tjabhi.joshi@gmail.com
25.	श्रीमती अर्चना सिंह दांगी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	आई एम ए दे.दून	देहरादून	9719761657	archana11sep@gmail.com
26.	श्रीमती वसुंधरा डूँडले	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	वी एफ जबलपुर	जबलपुर	9691708608	dhundelevasundhara28@gmail.com
27.	डॉ. पद्मनाभ जोशी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	ओएफ खामरिया जबलपुर	जबलपुर	9424870610	drpadamnabhjoshi@gmail.com
28.	श्रीमती अनुजा राय	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	नौरोजाबाद	जबलपुर	9589318258	raianuja2012@gmail.com
29.	डॉ. आर. सी. शर्मा	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	एन के जे कटनी	जबलपुर	9406740952	rcsharmakvs@gmail.com
30.	श्री राजीव कुमार स्वामी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	चुरु	जयपुर	9602588141	rswami81@gmail.com
31.	श्रीमती कुसुमलता जोशी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	बी एस एफ जोधपुर	जयपुर	9414041300	davekusum@gmail.com
32.	श्रीमती आरती भंडारी	स्नातकोत्तर शि.हिंदी	क्र.2 बीकानेर	जयपुर	9414451971	abhandari6993@gmail.com

केंद्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण (प्रथम चरण) 17 से 28 मई 2017
प्रतिभागी सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	केंद्रीय विद्यालय	संभाग	संपर्क सूत्र	ई पता
33.	श्री सीताराम जाट	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.1 बीकानेर	जयपुर	9982629656	sr75jat@rediffmail.com
34.	श्री राधाचरण	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.5 पहली पाली जयपुर	जयपुर	9799663782	rcsobr@gmail.com
35.	श्री लेखराज मीणा	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	उत्तरलाई	जयपुर	8209990702	meenalekhraj0007@gmail.com
36.	श्री मनोहर लाल	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.1 उदयपुर	जयपुर	9828840017	balajifuel51@gmail.com
37.	श्री एम स्वरूप	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.2 एएफ एस पुणे-32	मुम्बई	9822393631	m.swaroop1964@gmail.comom
38.	श्रीमती उर्मिला दीप	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	बीईजी एंड सेंतर पुणे	मुम्बई	9881270158	urmilardeep@gmail.com
39.	श्रीमती वीना सिंह	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	आई आई टी पवई	मुम्बई	9769278828	veena2605@gmail.com
40.	श्रीमती एस के भटकल	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	आई एन एस हामला	मुम्बई	9167033237	santoshbhatkalpgt@gmail.com
41.	श्री संजय कुमार शुक्ला	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.2 देवलाली	मुम्बई	9167886011	sanjayshuklapgt@gmail.com
42.	डॉ. आर. सी.पोद्दार	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	बी एस एफ किशनगंज	पटना	8051761304	drrcpoddar@gmail.com
43.	श्री अशोक कुमार	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	कंकड़बाग पटना प्रथम पाली	पटना	8986240460	Ashokjee.com@gmail.com
44.	श्रीमती मधु मंजरी लकड़ा	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.2 बेली रोड दूसरी पाली	पटना	9431324703	madhumanjri@hotmail.com
45.	श्री टी पी सिंह	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	ए एफ एस पुरेना	पटना	9430473852	tpsingh1464@gmail.com
46.	श्री विजय कुमार	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.2 बेली रोड पहली पाली	पटना	9525827800	thekumarvijay@rediffmail.com
47.	श्रीमती सुमन जायसवाल	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	अंकलेश्वर	अहमदाबाद	8511076918	sumanjaiswal17462@gmail.com
48.	श्रीमती भारती शर्मा	स्नातकोत्तर शिहिंदी.	क्र.1 बड़ौदा	अहमदाबाद	9928089154	bhartisharma25761@gmail.com

केंद्रीय विद्यालय संगठन

शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान , चंडीगढ़

सेवाकालीन प्रशिक्षण स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) प्रथम चरण

17 से 28 मई 2017

दीप प्रज्वलन एवं प्रार्थना के साथ स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) के सेवाकालीन प्रशिक्षण के प्रथम चरण का शुभारंभ हुआ

अध्यक्षीय सम्भाषण

श्री रनवीर सिंह , उपायुक्त के वि सं शि. एवं

प्र.आं.सं चंडीगढ़

सेवाकालीन प्रशिक्षण के उद्देश्य

डॉ. संध्या शर्मा

प्राचार्य एवं कोर्स निदेशक

कार्यों की रूप रेखा

श्री सुरेश कुमार

उप प्राचार्य एवं सह कोर्स निदेशक

श्रीमती सुनीता गुसांई

सह प्रशिक्षक हिंदी एवं संसाधिका

डॉ. मनोज गुप्ता

स्नातकोत्तर शिक्षक एवं संसाधक

श्री एस एल यादव

स्नातकोत्तर शि. कम्प्यूटर वि. एवं आई टी वि.

केंद्रीय विद्यालय संगठन , शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान , चंडीगढ़

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रथम चरण दिनांक 17 से 28.मई 2017

अतिथि वक्ता

केंद्रीय विद्यालय संगठन से अतिथि वक्ता				
क्र. सं	**नाम**	**पदनाम**	**कार्यालय / के वि विद्यालय**	**विषय**
1.	सुश्री टी रुक्मणि	सहायक आयुक्त	के वि सं क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ संभाग	बैक टू बेसिक
2.	श्रीमती इंदिरा मुद्गिल	सहायक आयुक्त	के वि सं क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ संभाग	सूचना का अधिकार
3.	श्रीमती शाम चावला	प्राचार्य	हाई ग्राउंडस चंडीगढ़	बाल शोषण
4.	श्री एन एल सिंगला	सहायक अनुभाग अधिकारी	के वि सै. 31 चंडीगढ़	अवकाश संबंधी नियम
5.	सुश्री रचना	सहायक अनुभाग अधिकारी	के वि सं क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ संभाग	सेवा संबंधी मामले

अन्य संस्थाओं से अतिथि वक्ता				
क्र. सं	**नाम**		**पदनाम**	**विषय**
1.	डॉ. चक्रेश	रंगमंच कलाकार	पंजाब कला समिति, सै. 16 चंडीगढ़	कहानी नाट्य रुपांतरण एवं मंचन
2.	डॉ. कुसुम	सहायक प्रो.	राजकीय शिक्षा महा विद्यालय सै. 20 चंडीगढ़	कविता शिक्षण
3.	प्रो. राजेश मोहन	सहायक प्रो.	ब्रजेंद्र महाविद्यालय, फरीदकोट	ग़ज़ल शिल्प और संरचना
4.	डॉ. राजकुमार	पत्रकार	दैनिक भास्कर	पत्रकारीय लेखन और व्यवसाय
5.	डॉ. संगीता पंत	डीन	कॉलेज ऑफ़ एडुकेशन, चित्कारा यूनिवर्सिटी	शिक्षण विधियाँ, फ्लिपड क्लास रूम

अतिथि वक्ता

श्री एम एस चौहान
उपायुक्त , के वि सं चंडीगढ़ संभाग

सुश्री टी रुक्मणि , सहायक आयुक्त
के वि सं चंडीगढ़ संभाग

श्रीमती इंदिरा मुद्गल , सहायक आयुक्त
के वि सं चंडीगढ़ संभाग

श्रीमती शाम चावला , प्राचार्य
के वि हाई ग्राउंडस ,चंडीगढ़

श्री एन एल सिंगला , सहायक अनुभाग
अधिकारी , के वि सै 31 चंडीगढ़

सुश्री रचना , सहायक अनुभाग अधिकारी
के वि सं चंडीगढ़ संभाग

श्री चक्रेश कुमार
रंगमंच कलाकार

डॉ. कुसुम , सहायक व्याख्याता
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय , चंडीगढ़

डॉ. राजेश मोहन ,सहायक व्याख्याता
राजकीय ब्रजेंद्रा महाविद्यालय ,
फरीदकोट

डॉ. राजकुमार , दैनिक भास्कर

डॉ. संगीता पंत , डीन , कॉलेज ऑफ एडुकेशन
चित्कारा यूनिवर्सिटी

श्री एस पी सिंह , सह प्रशिक्षक जीव
विज्ञान ज़ीट चंडीगढ़

बच्चन समूह

क्र. सं	प्रतिभागी	केंद्रीय विद्यालय
1.	श्रीमती सीमा शर्मा	क्र. 2 ,डी. एम् डब्ल्यू पटियाला
2.	श्रीमती शिवलता सोलंकी	वायु सेना स्थल, समाणा, जामनगर, गुजरात
3.	श्रीमती अनुजा राय	एस.ई.सी.एल. नौरोजाबाद जिला - उमरिया (म.प्र.)
4.	श्री सीता राम जाट	क्र.1 सागर रोड बीकानेर
5.	श्री हरि राम शर्मा	जाखू हिल्स शिमला
6.	श्री रंजीत कुमार	सौरखंड , पोस्ट-कोटाल गाँव, वाया लम्बगाँव, जिला टिहरी गढ़वाल
7.	श्री आर सी पोद्दार	सी.सु.बल, किशनगंज
8.	श्री सुरेश कुमार पाटीदार	एन.एच.पी.सी. धारचूला, जिला-पिथौरागढ़,
9.	श्री मंगल स्वरूप	क्र.२ वायुसेना स्थल पुणे
10.	श्रीमती कंचन सिंह	क्र.1 निकट पटेल पार्क, अम्बाला छावनी

सम्पन्न किए गए कार्य :

- लघु प्रश्नोत्तरी
- पाठ आधारित सहायक सामग्री
- कहानी का नाट्यरुपांतरण

निराला समूह

क्र. सं	प्रतिभागी	केंद्रीय विद्यालय
1.	श्रीमती आरती भंडारी	क्र.2 बीकानेर
2.	डॉ.कुसुम लता जोशी	सीमा सुरक्षा बल मण्डोर रोड़ जोधपुर
3.	श्री आनंद स्वरूप	कौसानी ,बागेश्वर
4.	श्री अशोक कुमार	कंकड़बाग पटना
5.	श्री सुरेश चंद्र बैरवा	द्वारका , गुजरात
6.	श्री अग्रचंद	क्र. 2 रेल डिब्बा कारख़ाना, हुसैनपुर ,कपूरथला
7.	डॉ. वीना सिंह	आई आई टी पवई मुंबई
8.	श्रीमती रीता	बी.एच.ई.एल. सेक्टर-4 हरिद्वार
9.	डॉ. रमा रानी	क्र. 02 वायु सेना स्थल आदमपुर

सम्पन्न किया गया कार्य :

- लघु प्रश्नोत्तरी
- पाठानुसार सहायक सामग्री
- चर्चा

महादेवी समूह

क्र. सं	प्रतिभागी	केंद्रीय विद्यालय
1.	सुश्री मीनू बाला	क्र,. 2 चंडीमंदिर
2.	श्रीमती सुमन जायसवाल	ओ एन जी सी अंकलेश्वर
3.	श्री संजय कुमार शुक्ल	के.वि.क्र. 1,देवलाली
4.	श्री विजय कुमार	क्र.2 बेली रोड शेखपुरा पटना
5.	डॉ. पदमबनाभ जोशी	ओएफ खामरिया जबलपुर
6.	श्री मनोहर लाल	क्रं -1, प्रतापनगर, उदयपुर
7.	श्री फूल चंद विश्वकर्मा	क्र.-2 वायु सेना स्थल हलवारा लुधियाना
8.	डॉ. नीलम सरीन	क्र.1 हाथी बड़कला दे.दून
9.	श्रीमती तारा जोशी	एफ आर आई देहरादून

सम्पन्न किए गए कार्य :

- लघु प्रश्नोत्तरी
- पाठानुसार सहायक सामग्री
- चर्चा (गजानन माधव मुक्तिबोध)

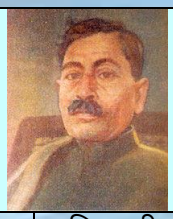

प्रेमचंद समूह

क्र. सं	प्रतिभागी	केंद्रीय विद्यालय
1.	श्रीमती मधु मंजरी लकड़ा	क्र.2 बेली रोड शेखपुरा मोड़ पटना
2.	श्रीमती वसुंधरा ढूँढले	वाहन निर्माणी जबलपुर
3.	श्रीमती उर्मिलादीप	बी ई जी , येरवडा पुणे
4.	डॉ. रजनी मिश्रा	क्र.1 इछानाथ सूरत गुजरात
5.	डॉ. पंकज कपूर	जतोग छावनी
6.	श्री श्रीरंजन द्विवेदी	मसूरी
7.	श्री राजीव स्वामी	चूरू, भालेरी रोड, चूरू
8.	डॉ. बी के पांडेय	क्र. 2 रुढ़की
9.	श्री जोगिंदर पाल सिंह	भनाला

सम्पन्न किए गए कार्य :

- लघु प्रश्नोत्तरी
- पाठानुसार सहायक सामग्री
- भूमिका निर्वहन एवं अपठित बोध

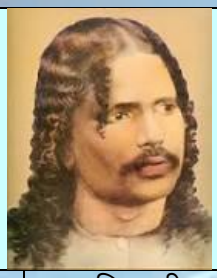

भारतेंदु समूह

क्र. सं	प्रतिभागी	केंद्रीय विद्यालय
1.	श्रीमती संतोष कुमारी भटकल	के वि हमला,मलाड (प.)मुंबाई
2.	श्रीमती अनीता गुप्ता	काशीपुर
3.	श्रीमती अर्चना सिंह दांगी	भारतीय सैन्य अकादमी , देहरादून
4.	श्रीमती भारती शर्मा	क्र.1, हरनी वड़ोदरा
5.	श्री मुकेश कायल	क्र. 3 ,वायुसेना -2 ,जामनगर
6.	श्री लेखराज मीणा	वायुसेना स्थल उत्तरलाई ,बाड़मेर राजस्थान
7.	श्री रघुवीर प्रसाद	आई वी आर आई मुक्तेश्वर नैनीताल उत्तराखंड
8.	श्री राधाचरण	क्र.5 पहली पाली जयपुर
9.	श्री के जी शुक्ला	एफ.ए.डी बद्दोवाल कैंट लुधियाना पंजाब
10.	श्री त्रिभुवन प्रसाद सिंह	केंद्रीय विद्यालय चुनापुर, पुर्निया बिहार

सम्पन्न किए गए कार्य :

- लघु प्रश्नोत्तरी
- पाठानुसार सहायक सामग्री
- पुस्तक समीक्षा

स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण (प्रथम चरण)

17 से 28 मई 2017 प्रतिवेदन

प्रतिवेदन : दिनांक 17.05.2017

उद्घाटन समारोह से हुआ सेवाकालीन प्रशिक्षण का शुभारंभ

केन्द्रीय विद्यालय संगठन शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान,चंडीगढ़ में स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षकों के लिए दिनांक 17.5.17 से 28.5.17 तक चलने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया हैं। दिनांक 17.05.2017 की दिनचर्या की शुरुआत सहजयोग से हुई।प्रातः 9 बजे श्री रनवीर सिंह जी,उपायुक्त एवं निदेशक, केन्द्रीय विद्यालय संगठन शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़ ने सभी प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।ध्वजारोहण के उपरांत श्री रनवीर सिंह जी, उपायुक्त एवं निदेशक,डॉ.संध्या शर्मा कोर्स निदेशक और श्री सुरेश कुमार जी सह कोर्स निदेशक ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।माँ सरस्वती की वंदना की गई।अतिथि देवोभवः की परंपरा का निर्वहन करते हुए उपायुक्त महोदय,कोर्स निदेशक महोदया एवं कोर्ससह निदेशक महोदय एवं सभी प्रतिभागियों का अभिनंदन किया गया ।

कोर्स निदेशक डॉ.संध्या शर्मा ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कोर्स के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि शिक्षा में नवाचार,नवीन प्रयोग,भाषायी कौशलों में विकास एवं समाज की ज़रूरतों के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता है।साथ ही कक्षा-कक्ष शिक्षण मे आने वाली समस्याओं पर विस्तार से चर्चा करना,निरंतर स्वाध्याय की आदत को विकसित करना और एक-दूसरे के अनुभवों से स्वयं को लाभान्वित करना इस कोर्स के प्रमुख उद्देश्य हैं।

उपायुक्त महोदय श्री रनवीर सिंह ने अपने प्रेरक उद्बोधन में आज के बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रभावी शिक्षण के साथ रुचिकर शिक्षण पर बल दिया। शिक्षण को रुचिकर व प्रभावी बनाने के लिए उन्होंने तीन पद्धतियों पर प्रकाश डाला –

1 - को-ऑपरेटिव लर्निंग(Co-operative learning)

2- कॉलेब्रेटिव (Collaborative learning)

3- पियर ग्रुप लर्निंग (Peer group learning)।

उनके अनुसार इन पद्धतियों के प्रयोग एवं नवाचार से शिक्षक अपने कक्षा-कक्ष शिक्षण को प्रभावी एवं रुचिकर बनाने के साथ 'बैक टू बेसिक' के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं।कोर्स सह निदेशक श्री सुरेश कुमार ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे बीच में ऐसे शिक्षकों की उपस्थिति है, जिनका केंद्रीय विद्यालय संगठन में दीर्घकालीन अनुभव है। ऐसे शिक्षकों से विशेष आग्रह रहेगा कि वे अपने मूल्यवान अनुभवों को सबके साथ साझा करें ।

सभी प्रशिक्षणार्थियों को -1 हरिवंश राय बच्चन 2- महादेवी वर्मा 3- निराला 4- प्रेमचंद 5- भारतेन्दु पाँच समूहों में विभाजित किया गया। सभी समूहों से समूह गतिविधियों की सूची भी बनवाई गई, जिन पर आगामी दिनों मे चर्चा होगी ।

भोजनावकाश के पश्चात सभी प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण पूर्व परीक्षा ली गई,जिसकी अवधि तीन घंटे थी।इसी के साथ सेवाकालीन प्रशिक्षण के प्रथम दिवस की गतिविधियों का समापन हुआ ।

प्रतिवेदन : दिनांक 18.05.2017

दिनांक 18.05.2017 की शुरुआत प्रातः 6 बजे सहजयोग के साथ हुई।डॉ.संध्या शर्मा,कोर्स निदेशक ने प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण किया, तत्पश्चात् प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रथम सत्र की शुरुआत कोर्स निदेशक के प्रेरक उद्बोधन से हुई,जिसमें उन्होंने बताया कि अच्छे कर्म ही आपकी पहचान हैं।जिसकी नीति अच्छी होगी उसकी उन्नति भी होगी। मैं श्रेष्ठ हूँ और मैं ही श्रेष्ठ हूँ के अंतर को स्पष्ट किया। इसी क्रम में निदेशक महोदया ने विषय समिति के महत्त्व तथा बैठक में शामिल किए जाने वाले बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की।इसके उपरांत संसाधिका श्रीमती सुनीता गुसाईं ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम 2017-18 पर चर्चा की ।

चाय के अंतराल के बाद पंजाब आर्ट्स सोसायटी चंडीगढ़ से आए अतिथि वक्ता डॉ. चक्रेश कुमार का उद्बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने कहानी के नाट्यरूपान्तरण व रंग मंच की अन्य बारीकियों के बारे में बताया ।

भोजनावकाश के उपरांत राजकीय शिक्षा महाविद्यालय सैक्टर 20,चंडीगढ़ से आईं अतिथि व्याख्याता डॉ.कुसुम ने कविता शिक्षण की विविध विधियों पर प्रकाश डाला तथा बताया कि कविता भाव प्रधान होती है,जिसमें सत्यं,शिवं,सुंदरम् तलाशा जाता है। प्राथमिक स्तर की कविता शब्द प्रधान, माध्यमिक स्तर पर अर्थ प्रधान तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर भाव प्रधान होती है ।

अंतिम सत्र में समूह कार्य का विभाजन किया गया तथा उसके सम्पन्न करने के तरीके पर चर्चा हुई।प्रत्येक प्रतिभागी को उसके द्वारा प्रस्तुत करने हेतु आदर्श पाठों के विभाजन के साथ सत्र का समापन हुआ।

प्रतिवेदन : दिनांक 19.05.2017

दिनांक 19.05.2017 की शुरुआत प्रातः 6 बजे सहजयोग के साथ हुई।ध्वजारोहण के साथ प्रार्थना सभा की कार्यवाही सम्पन्न की गई।प्रथम सत्र की शुरुआत शिविर निदेशिक डॉ.संध्या शर्मा ने अपना प्रेरणाप्रद उद्बोधन देते हुए की।उन्होंने देशभक्त बलिदानियों के प्रति आभारी होने का संदेश दिया। इसके पश्चात श्री सुरेश कुमार, शिविर सह निदेशक द्वारा पत्रकारिता के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश

डाला गया।पत्रकारिता के सैद्धांतिक पक्ष के स्पष्टीकरण के साथ-साथ उन्होंने प्रतिभागियों के विभिन्न प्रश्नों का समाधान भी किया ।

चायकाल के पश्चात श्री सुंदरलाल यादव, पीजीटी कंप्यूटर विज्ञान द्वारा इंट्रेक्टिव बोर्ड को कक्षा शिक्षण में कैसे प्रभावी तरीके से उपयोग में लाया जा सकता है, इसकी जानकारी "स्वयं करके सीखो" विधि द्वारा दी गई ।

भोजनावकाश के पश्चात शिविर सह निदेशक श्री सुरेश कुमार द्वारा कविता के सौंदर्य का साक्षात्कार वीडियो दिखाकर करवाया।तदुपरांत प्रतिभागियों द्वारा आदर्श पाठ की **प्रस्तुतियाँ** दी गईं। अंत में, प्रतिभागियों ने समूह कार्य की विभिन्न गतिविधियों को सम्पन्न किया।

प्रतिवेदन : दिनांक 20.05.2017

प्रतिदिन की भाँति दिनांक 20.05.2017 का शुभारंभ सहजयोग से किया गया। प्रातः 9 बजे शिविर निदेशक डॉ. संध्या शर्मा ने ध्वजारोहण किया।इसके बाद सरस्वती वंदना, प्रतिज्ञा, सुविचार एवं विशेष कार्यक्रम के साथ प्रार्थनासभा सम्पन्न हुई।प्रार्थना सभा में प्रकृति के चितेरे कवि सुमित्रानंदन पंत जी के जन्मदिवस पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।श्री एम.एस.चौहान,उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन,चंडीगढ़ संभाग,डॉ.संध्या शर्मा,शिविर निदेशिका एवं श्री सुरेश कुमार,शिविर सह निदेशक ने पुष्पांजलि अर्पित करके महाकवि पंत को नमन किया।

श्री एम.एस.चौहान,उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन,चंडीगढ़ संभाग ने अपने सम्बोधन में शिक्षक के गुणों के बारे में बताते हुए उसे सदैव अध्ययनशील, सकारात्मक, स्नेहिल व अपने कर्मक्षेत्र से प्रेम करने की प्रेरणा दी।अतिथि वक्ता सुश्री रचना,सहायक अनुभाग अधिकारी,केंद्रीय विद्यालय चंडीगढ़ संभाग ने सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियों की जानकारी से अवगत कराया तथा प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण किया गया।

जलपान के उपरांत डॉ.राजेश मोहन ने गीत, गज़ल एवं नज़्म की बारीकियों से परिचित करवाया।अपने वक्तव्य के अंत में उन्होंने गज़लों का सस्वर वचन किया।उनकी प्रस्तुतियों से सभी प्रतिभागी श्रोता झूम उठे ।

भोजनावकाश के पश्चात प्रतिभागियों ने आदर्श पाठ की प्रस्तुत किए।अंतिम सत्र में प्रतिभागियों ने समूह कार्य की विभिन्न गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

प्रतिवेदन : दिनांक 21.05.2017

प्रशिक्षण शिविर के पाँचवें दिन का श्री गणेश प्रतिदिन की भाँति सहजयोग से हुआ। प्रातः 9 बजे झण्डा फहराने के बाद प्रार्थना सभा की प्रस्तुतियाँ दी गईं। प्रथम सत्र की व्याख्यानमाला की प्रथम कड़ी में डॉ. संध्या शर्मा, कोर्स निदेशका द्वारा व्यक्तित्व विकास के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला गया।

व्याख्यानमाला की दूसरी कड़ी में डॉ. राजकुमार,पत्रकार दैनिक भास्कर समूह ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।उन्होंने प्रतिभागियों को पत्रकारिता की ताकत से अवगत करवाया।उन्होंने बताया कि पत्रकारिता एक बड़ी जिम्मेदारी है और यदि हम इसे व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हैं तो हमें इसकी गंभीरता से अवगत होना ज़रुरी है।उन्होंने पत्रकारिता के अनेक बिन्दुओं की चर्चा करते हुए प्रतिभागियों की शंका का निवारण किया।

भोजनावकाश के उपरांत प्रतिभागियों ने आदर्श पाठ प्रस्तुत किए।अंत में, प्रतिभागियों ने समूह कार्य की विभिन्न गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

प्रतिवेदन : दिनांक 22.05.2017

दिन का प्रारंभ उपवन में सहजयोग के अभ्यास के साथ हुआ जिसमे बंधन एवं पैर पानी प्रक्रिया का दोहराव किया गया। प्रातः 9 बजे डॉ. संध्या शर्मा के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के बाद सदन में निराला समूह द्वारा प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया गया । प्रार्थना सभा में आकर्षक प्रस्तुतियों के साथ-साथ श्रीमती नीलम सरीन द्वारा तनाव प्रबंधन पर मोहक प्रस्तुति दी गई।

प्रशिक्षण के प्रथम चरण में डॉ. मनोज गुप्ता द्वारा हिंदी विषय को विद्यार्थियों में रुचिकर बनाने के सम्बन्ध में प्रस्तुत व्याख्यान एवं चर्चा में सदन द्वारा बेहद जोश के साथ सहभागी होते हुए उपयोगी अनुभव साझा किए गए। प्रथम चरण के अगले भाग में डॉ. सुरेश कुमार द्वारा प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी.वी., फीचर, रिपोर्ट ,स्तम्भ लेखन आदि के सम्बन्ध में सरल एवं रुचिकर प्रस्तुति दी गयी जो बेहद सराहनीय रही ।

प्रातः चाय अन्तराल के बाद आदर्श पाठ प्रस्तुति में श्री अग्रचंद द्वारा अप्पू के साथ ढाई साल, श्री रंजीत कुशवाहा द्वारा घर की याद एवं श्री सुरेश कुमार पाटीदार द्वारा लक्ष्मण मूर्च्छा एवं राम का विलाप पाठों की प्रशंसनीय प्रस्तुति दी गयी ।

भोजनावकाश पश्चात चंडीगढ़ संभाग की सहायक आयुक्त श्रीमती इंदिरा मुद्गल द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 विषय पर तथ्य परक एवं सटीक प्रस्तुति से सभी लाभान्वित हुए जिसमें नियमों पर विस्तृत चर्चा की गयी । सांयकालीन चाय अन्तराल के बाद प्रशिक्षणार्थियों द्वारा

टंकण एवं पुस्तकालय का उपयोग करते हुए अपने आवश्यक कार्यों को संपन्न किया गया । सांय 5:30 बजे राष्ट्र ध्वज के अवरोहण के साथ एक और दिन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ ।

प्रतिवेदन : 23.05.2017

दिनांक 23.05.2017 को दिन की शुरुआत प्रतिदिन की तरह प्रातःकालीन सहज योग से शुरू हुई ध्वजारोहण के बाद प्रातः कालीन प्रार्थना सभा का आयोजन निराला समूह की और से बड़े ही भाव प्रवण ढंग से प्रस्तुत किया गया ।

सत्र का प्रारंभ माननीय उपयुक्त महोदय श्री रणवीर सिंह के सम्बोधन से हुआ उन्होंने स्टीफन आर कॉय की पुस्तक 'SEVEN HABITS OF HIGHLY EFFFECTIVE PEOPLE" पुस्तक पर आधारित प्रभावशाली व्यक्तियों की सात आदतों को प्रतिभागियों के सम्मुख रखा। उन्होंने बताया कि किस प्रकार इन आदतों को अपने जीवन में समाहित करके हम स्वयं भी प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति बन सकते है ।

इसके पश्चात् श्रीमती शाम चावला, प्राचार्य के वि हाई ग्राउंड ने बाल शोषण पर अति महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि हमें विद्यार्थियों और उनमें होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन का ध्यान रखते हुए बड़ी संजीदगी के साथ उन्हें समझने का प्रयास करना होगा।उन्होंने बाल अधिकारों से भी परिचित करवाया ।

अल्प विराम के पश्चात् श्री एस.पी. सिंह द्वारा किशोर शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता से परिचित करवाया गया।भोजनावकाश के बाद किशोर शिक्षा कार्यक्रम से अर्जित जानकारी प्राप्त करने हेतु अध्यापको के दृष्टिकोण पर आधारित एक बहुविकल्पीय परीक्षा का आयोजन किया गया ।

इसके उपरांत मध्य सत्र परीक्षा का आयोजन किया गया।

अंतिम सत्र में हास्य कलाकार चार्ली चैपलिन की एक फिल्म दिखाई गई। इसके पश्चात् " चार्ली चैप्लिन यानी हम सब" पाठ पर एक परिचर्चा का आयोजन भी किया गया इसमें श्री एस.आर.जाट,श्री राजीव स्वामी ,श्री मनोहर लाल एवं श्रीमती नीलम सरीन ने प्रस्तुति दी जो बहुत ही प्रभावशाली थी। संध्या के अंतिम सत्र में ध्वज अवरोहण किया गया इस प्रकार एक और दिवस का समापन बड़े ही व्यस्त एवं प्रभाव पूर्ण ढंग से संपन्न हुआ ।

प्रतिवेदन : दिनांक 24/5/17

प्रेमचंद समूह से ये सिर्फ, चंद प्रेम के शब्दो का संवेदन
कहने भर को कल की गतिविधियाँ, और आज का प्रतिवेदन

प्रात:कालीन बेला में शरीर को स्वस्थ और मन को एकाग्र व शांत चित्त रखने हेतु सहज योगाभ्यास किया गया । माननीय शिविर निदेशक महोदया की अध्यक्षता में दिनांक 24.5.17 को ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात प्रार्थना सभा के विविध कार्यक्रम कथाकार, उपन्यासकार के नाम से संचालित प्रेमचन्द समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसका कुशल संचालन श्री जे पी डोगरा ने किया। प्रतिज्ञा श्री रंजन द्विवेदी ,सुविचार श्रीमती रजनी मिश्रा, समाचार श्री वी के पांडे, शब्दार्थ श्रीमती उर्मिलादीप प्रतिवेदन श्रीमती वसुंधरा ढुँढले तथा विशेष कार्यक्रम श्री राजीव कुमार स्वामी द्वारा "आनंद की पाठशाला" रूपक प्रस्तुत करके सब को मन्त्र मुग्ध कर दिया ।

प्रथम सत्र के प्रारंभ में शिविर निदेशक महोदया डॉ.संध्या शर्मा ने कहा आनंद की पाठशाला हमें बच्चो के जीवन के वास्तविक धरातल तक ले जाती है। इसके साथ ही उन्होने यह भी कहा कि आनंद की असली अनुभूति कक्षा शिक्षण में ही है।इसके साथ ही अभिव्यक्ति कौशल पर बल दिया गया।तत्पश्चात सह निदेशक श्री सुरेश कुमार जी ने प्रात:कालीन सभा के अंतर्गत प्रस्तुत विशेष कार्यक्रम की सराहना करते हुए साहिर लुधियानवी पर एक फीचर प्रस्तुत करते हुए बताया कि आनंद कि पाठशाला जैसी रचना हमें फीचर के करीब ले जाती है।उनके बाद संसाधक महोदया श्रीमती सुनीता गुसांई ने शिक्षण में "आई सी टी" का प्रयोग विषय पर बहुत ही सुगम व सहज तरीके से सभी का मार्गदर्शन कर लाभान्वित किया।

द्वितीय सत्र में ज्ञान शिविर निदेशक महोदया द्वारा प्रस्तुत सम्प्रेषण कौशल जिसके अंतर्गत प्रभावी बातचीत,बातचीत में सहयोगी और प्रेरित करने वाला,ज्ञानी और शिक्षित व्यक्ति, विषयानुरूप, तार्किकता,प्यारे श्रोता आदि बिन्दु वास्तव में हम सभी की शिक्षण कला को निखारने में सहायक सिद्ध होंगे ।

इसके पश्चात तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी उपायुक्त महोदय श्री रणवीर सिंह जी द्वारा सीखने के सिद्धांत को बहुत ही सहज व व्यावहारिक तरीके से बताया गया साथ ही शिक्षको हेतु के वि सं की नियमावली की विस्तृत जानकारी दी गयी ।

भोजनावकाश के पश्चात समूह चर्चा के अंतर्गत निराला समूह द्वारा गजानन माधव मुक्तिबोध के जीवन **रचनाएँ** विशेष तौर पर सहर्ष स्वीकारा है कविता पर सारगर्भित चर्चा प्रस्तुत की गयी। इस चर्चा में सभी प्रतिभागियों की सहभागिता सराहनीय रही है।पाठ की वास्तविकता सभी के संतुष्ट मुख से परिलक्षित हो रही थी ।

शिविर निदेशक महोदया ने इस पर सारगर्भित टिप्पणी कुछ इस प्रकार प्रस्तुत की कि पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।ध्वज अवरोहण के साथ ही दिनचर्या का समापन किया गया।

अंत में सह निदेशक महोदय द्वारा शाम 7 बजे भावनात्मक फिल्म हयात दिखाई गई। यह फिल्म बालिका शिक्षा की ज्वलंत समस्या तथा जीवन कौशल पर आधारित थी ।

प्रतिवेदन : दिनांक 25/05/2017

दिनांक को सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर का प्रारम्भ प्रात 2017/05/25-: काल सहज योग के साथ हुआ।इसके बाद श्री रनवीर सिंह, निदेशक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चडीगढ़ द्वारा ध्वजा रोहण किया गया। प्रेमचंद समूह द्वारा प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। मंच संचालन डॉ.बी.के.पाण्डेय द्वारा किया गया।प्रतिज्ञा श्री रंजन द्विवेदी ,विचार श्री राजीव स्वामी,समाचार डॉ रजनी मिश्रा ,आज का शब्द श्रीमती मधु मंजरी ,विशेष प्रस्तुति डॉ. पंकज कपूर और प्रतिवेदन श्रीमती उर्मिला द्वारा प्रस्तुत किया गया। शिविर के प्रथम सत्र में सुश्री टी रुक्मणी., सहायक आयुक्त ने हम सभी को " बैक टू बेसिक" के बारे में महत्वपूर्ण व सटीक जानकारी दी। उन्होनें गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'बन चले रघुराई' गाकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। डॉ संध्या शर्मा पाठ्यक्रम निदेशक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

चायकाल उपरांत शिक्षा महाविद्यालय चितकारा की डीन डॉ संगीता पंत ने शिक्षण की विधियाँ विषय पर बहुत ही रुचिकर व्याख्यान दिया। साथ ही विभिन्न क्रिया कलापों द्वारा कक्षा में किस प्रकार हम छात्रों को विषय से बांधे रखें एवं उन्हें सहज ढंग से सिखा सके इसका प्रदर्शन भी किया।

भोजनोपरांत श्री रनवीर सिंह निदेशक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चडीगढ़ ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कर्मचारियों के लिए सेवा संबंधी नियमों से शिविर के प्रतिभागियों को परिचित करवाया,जो सभी प्रतिभागियों के लिए बेहद उपयोगी रहा।

अंतिम सत्र में केन्द्रीय विद्यालय सै 31.चंडीगढ़ से आए हुए श्री एन.एनसिंगला ., सहायक अनुभाग अधिकारी ने शिविर के प्रतिभागियों से अवकाश संबंधी नियमों की जानकारी दी। इसके उपरांत शैक्षिक भ्रमण हेतु आवश्यक जानकारी प्रतिभागियों को दी गई । साँयकाल ध्वजा अवरोहण के साथ ही शिविर के नवें दिन की गतिविधियां संपन्न हुई ।

प्रतिवेदन : दिनांक 26/05/ 2017

शिविर के प्रतिभागियों के लिए गुरु नगरी अमृतसर के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया। सभी प्रतिभागी प्रात: 5:30 बजे बस द्वारा अपने गंतव्य के लिए रवाना हुए। सबसे पहले सभी प्रतिभागी, जनरल डायर की क्रूरता की पराकाष्ठा का गवाह, बलिदान एवं उत्सर्ग के चरम प्रतीक, अपने देश पर हँसते हँसते जान न्योछावर करने वाले शहीदों के स्मारक जालियाँ वाला बाग पहुँचे ।

वहाँ की पावन मिट्टी को सभी ने अपने मस्तक पर लगाकर अपने को धन्य माना। इसके बाद सभी प्रतिभागी विश्व प्रसिद्ध श्री हरमंदिर साहब के दर्शन करने पहुँचे। वहाँ पर सभी ने दर्शन करने के उपरांत गुरु के प्रसाद के रूप में लंगर छका ।

लंगर छकने के बाद सभी प्रतिभागी भारत –पाक की सीमा दर्शन हेतु वाघा बॉर्डर की ओर चल दिए। वहाँ पर हमारे बी एस एफ के जवानों की जीवंत एवं शानदार परेड देखकर सभी के अंदर देश भक्ति की भावना उमड़ पड़ी। सभी स्वयं को देश प्रेम के भाव से ओतप्रोत एवं रोमांचित महसूस कर रहे थे। दोनों देशों के ध्वज अवरोहण के साथ सभी प्रतिभागी गुरु नगरी के स्वर्ण मंदिर ,जालियाँ वाला बाग एवं वाघा बॉर्डर की यादें संजोये हुए वापस शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान चडीगढ़ के ओर रवाना हुए। हम सभी प्रतिभागियों की ओर से इस शैक्षिक भ्रमण के सभी आयोजकों को कोटिश : धन्यवाद ।

प्रतिवेदन :27/05/2017

दिनांक 27.05.2017को दिवस का आरंभ प्रातःकालीन सहज योग के साथ हुआ। प्रातः बजे 09:00 ध्वजावरोहण के उपरांत प्रार्थना सभा का आयोजन भारतेंदु समूह की ओर से किया गया । प्रथम सत्र श्री एस पी सिंह,सह प्रशिक्षक जीव विज्ञान द्वारा लिया गया।उन्होंने एच आई वी एडस की जानकारी देते हुए बताया कि किशोरों से किस प्रकार संतुलित व्यवहार करना चाहिए।

दूसरे सत्र में श्री सुरेश कुमार,सह कोर्स निदेशक द्वारा पुस्तकालय को समृद्ध बनाने हेतु पुस्तकों के बारे में चर्चा की । उन्होंने कुछ पुस्तकों एवं लेखकों के नाम प्रतिभागियों को नोट करवाए।उन्होंने यह भी जानकारी दी कि किसी पत्रिका अथवा समाचार पत्र में अपना लेख कैसे प्रकाशित करवाया जा सकता है ।

चाय के अंतराल के बाद उत्तर परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा के उपरांत श्री सुरेश कुमार, सह कोर्स निदेशक द्वारा सृजनात्मकता पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि सृजनात्मकता के दो प्रकार हैं एक अनुभव के स्तर पर और दूसरा अभिव्यक्ति के स्तर पर । विचार करना प्राकृतिक है और अभिव्यक्त करना यांत्रिक।

भोजन के अंतराल के बाद बच्चन समूह द्वारा नाट्यरुपांतरित कहानी जामुन का पेड़ का मंचन प्रेमचंद समूह द्वारा किया गया।इसका निर्देशन डॉ.पंकज कपूर द्वारा किया गया।प्रतिभागियों का अभिनय सराहनीय था।नाटक की सम्पूर्ण प्रस्तुति आकर्षक, मनोरंजक,रोचक और प्रभावशाली थी । तालियों की गड़गड़ाहट उसकी सफलता की सूचक थी ।

मंचन के बाद नाटक की समीक्षा की गई ।

इसके उपरांत समाचार पत्र हेतु टीम का चयन किया गया और एक गतिविधियों से पूर्ण प्रशिक्षण दिवस सम्पूर्ण हुआ।

प्रतिवेदन : दिनांक28/05/2017

सहजयोग से आरंभ हुए आज के दिवस में प्रतिभागी बड़े ही उल्लास से भरे हुए थे। ध्वजारोहण के उपरांत प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ। शिविर निदेशक डॉ.संध्या द्वारा सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया गया। इसके उपरांत प्रथम सत्र में अपठित बोध पर चर्चा की गई ।.

दूसरे सत्र में पुस्तक समीक्षा पर चर्चा की गई । प्रतिभागियों ने लिखी गई समीक्षा को पढ़ा और उसके उपरांत सभी प्रतिभागियों ने उसपर चर्चा की। इसके साथ ही डॉ. मनोज गुप्ता ,संसाधक के कविता पाठ को श्री सुरेश कुमार पाटीदार द्वारा रिकॉर्ड किया गया।अन्य प्रतिभागियों ने भी अपनी आवाज़ रिकॉर्ड करने के अनुभव का अनंद लिया ।

भोजनोपरांत प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए श्रीमती सुनीता गुसांई संसाधिका द्वारा शिविर के दौरान तैयार की गई पाठानुसार लघु प्रश्नोत्तरी पर चर्चा की और कहा कि इस कड़ी को आगे बढ़ाया जाएगा । उन्होंने कक्षा में शिक्षण हेतु तैयार हिंदी विषय की शिक्षण सामग्री के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हम कक्षाओं में इसका भरपूर प्रयोग करेंगे।इसके उपरांत प्रतिभागियों से प्रतिपुष्टि ली गई और सेवाकालीन प्रशिक्षण के दूसरे चरण हेतु सुझाव लिए गए ।

समापन सत्र के दौरान प्रतिभागियों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किए गए। श्री रनवीर सिंह , उपायुक्त एवं निदेशक महोदय ने प्रतिभागियों संबोधित करते हुए अपने आप को अद्यतन करने और **चुनौतियाँ** लेने के लिए प्रेरित किया । शिविर निदेशक डॉ. संध्या ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा का क्षेत्र चुनौतियों से भरा हुआ है। हम अपने भीतर वो ज़ज़्बा पैदा करें कि हमारा विषय रुचिकर बन सके और सम्प्रेषण की ताकत के साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण कर सके ।

कुछ लिख के सो , कुछ पढ़ के सो
तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़ के सो ।

भवानी प्रसाद मिश्र जी की इन पंक्तियों के साथ सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर के प्रतिभागी , दूसरे चरण की तैयारी हेतु अपने अपने गंतव्य स्थल की ओर अग्रसर हुए ।

(प्रतिवेदन द्वारा सभी समूह, संकलन श्री सुरेश कुमार पाटीदार,संपादन श्रीमती सुनीता गुसांई)

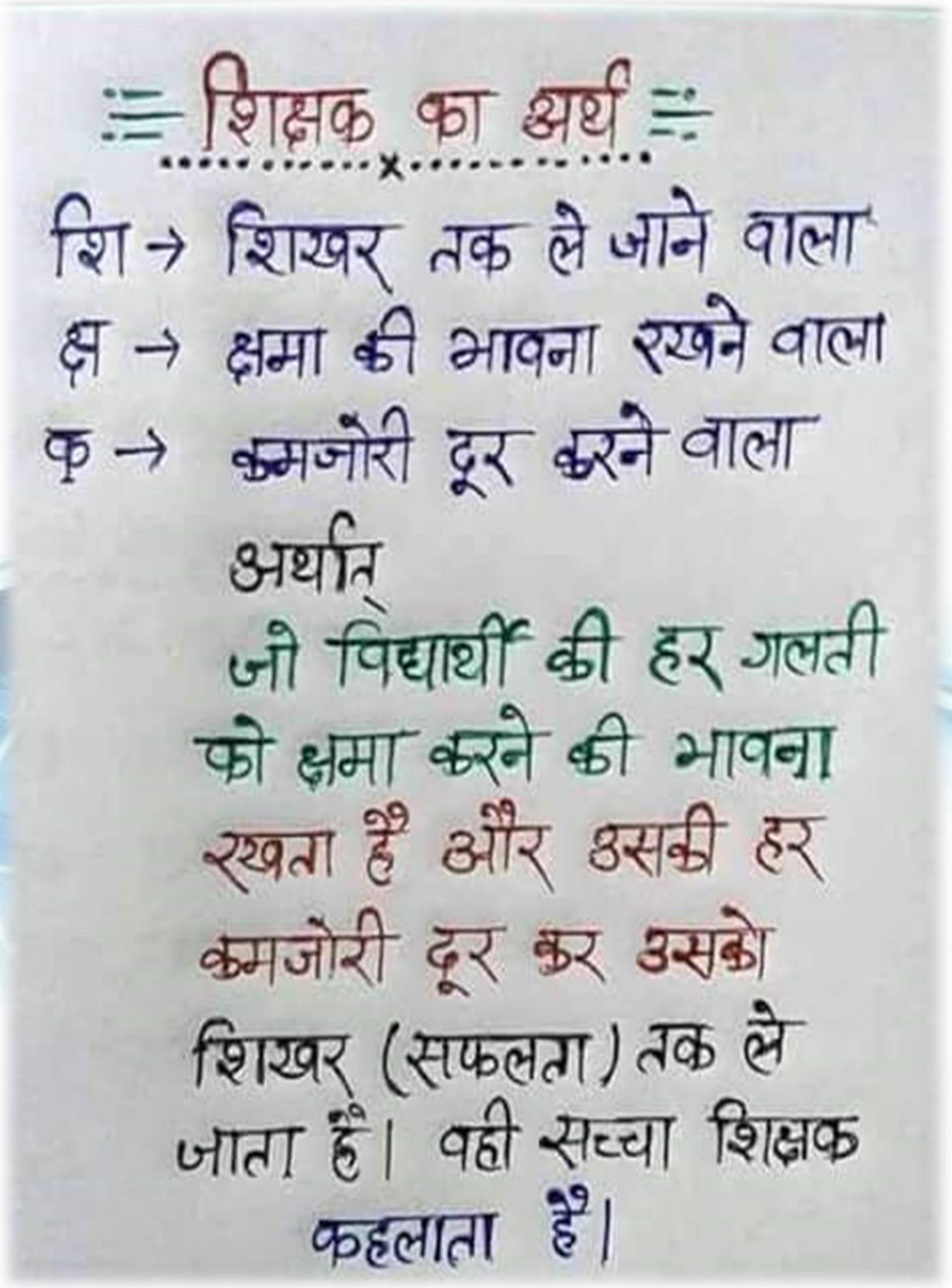

स्रोत : https://educationmirror.org

अति प्रभावशाली लोगों की 7 आदतें
(व्याख्यान सार)

श्री रनवीर सिंह
उपायुक्त एवं निदेशक
के वि सं ज़ीट चंडीगढ़

दुनिया की बेहतरीन सेल्फ-हेल्प किताबों में शुमार है 7 हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव पीपल। हिंदी में किताब 'अति प्रभावशाली लोगों की 7 आदतें' नाम से आई है। किताब चर्चा करती है ऐसी आदतों के बारे में, जो कामयाब लोगों में पाई जाती हैं और नाकाम लोग जिनसे दूर रहते हैं। किस तरह कुछ आदतों को अपनाने से कामयाबी का रास्ता खुद-ब-खुद साफ होता जाता है, इसी बात को लेखक ने बेहद साफ और सरल तरीके से बताया है। वैसे, ज्यादातर लोगों का मानना है कि आदतों को छोड़ना या नई आदतें बनाना आसान नहीं है लेकिन अगर मन में ठान लें तो यह इतना मुश्किल भी नहीं है। किताब सात आदतों की चर्चा करती है, जिनके जरिए हम खुद को शारीरिक, सामाजिक, मानसिक और

आध्यात्मिक तरीके से बेहतर कर पाएँगे।ये आदतें हैं :

1. प्रो-ऐक्टिविटी अर्थात आगे बढ़कर फैसले लेना। यह आदत सबसे जरूरी है क्योंकि हमारे फैसले ही मुख्य रूप से हमारी जिंदगी की दिशा तय करते हैं। अपने फैसलों के साथ-साथ उनके नतीजों की जिम्मेदारी भी लें।

2. अंत को ध्यान में रखकर शुरुआत करें। कोई भी काम दो स्तर पर होता है, पहले मानसिक और फिर व्यावहारिक। यानी पहले मन में सोचें कि क्या करना है और फिर उसे करने के लिए कदम उठाएं। अपनी जिंदगी के मकसद, भूमिकाओं, कर्मों और रिश्तों पर ध्यान दें और इनके भविष्य के बारे में भी सोचें। इसे दिवास्वप्न / विजुअलाइजेशन भी कहा जाता है।एथलीट इसके सहारे ही आगे की रणनीति तय करते हैं।

3. प्राथमिकता तय करें। किसी भी काम को तकाजे के अनुसार न करके, उसकी जरूरत के मुताबिक करें। योजना बनाएँ और उसके अनुसार अपने कामों की प्राथमिकता तय करें। जो काम जरूरी हो हो, उसे पहले करें क्योंकि सभी काम एक साथ नहीं हो सकते। इसी तरह अंतिम समय के लिए इंतजार करना भी बेकार है।

4. अपनी जीत की बजाय सबकी जीत पर केंद्रित हों । खुद अपनी उपलब्धि या जीत की बजाय खुद से जुड़े लोगों और टीम की जीत को ध्यान में रखकर काम करें। आमतौर पर लोग समझते हैं कि अगर दूसरों को ज्यादा मिलेगा तो उन्हें कम मिलेगा। जिंदगी के बारे में यह सच नहीं है इसलिए आपसी फायदे के समाधान तलाशें। सबका फायदा होगा तो आपका भी फायदा होगा।

5. खुद को समझे जाने से पहले दूसरों को समझें। दूसरों को सुनने की आदत डालें। इससे आप उन्हें

बेहतर तरीके से समझ पाएंगे। ऐसा करने पर दूसरे भी आपको खुले दिमाग से समझने की कोशिश करेंगे। इस तरह आपसी समझ, प्रेम और इज्जत का माहौल कायम होगा, जो समस्या का सही समाधान मुहैया कराएगा।

6. सकारात्मक टीमवर्क पर बल दें। इसके जरिए लोगों की ताकत को एकजुट करें। इससे वे काम मुमकिन हो पाएँगे, जो कोई अकेला इंसान नहीं कर सकता। मददगार नेतृत्व और प्रेरणा के जरिए आप लोगों से बेहतर काम ले सकते हैं। यहाँ एक तरह से एक और एक ग्यारह का मंत्र समझाया गया है।

7. धार को पैना करें। अपने संसाधनों, ताकत और सेहत को तराशते रहें। इसके लॉन्ग टर्म फायदे होंगे

किताब मोटे तौर पर आत्मनिर्भरता के साथ-साथ दूसरों पर निर्भरता की भी बात करती है। इसमें दी गईं पहली तीन आदतें हमें आत्मनिर्भर बनाती हैं, उसके बाद की तीन आदतें दूसरों पर निर्भर और आखिरी आदत हमें पूरा करती है।
किताब की अहम बातें
- हम उसी पल प्रभावशाली हो जाते हैं, जिस पल हम दूसरों को बदलने की बजाय खुद को बदलने का फैसला करते हैं।

- सच्चाई का साथ देने का सबसे अच्छा तरीका उन लोगों का सम्मान करना है, जो मौजूद नहीं हैं। ऐसा करके हम उन लोगों का भरोसा जीत सकते हैं, जो वहाँ मौजूद हैं।

- ज्यादातर लोग समझने की मंशा से दूसरों को नहीं सुनते, बल्कि जवाब देने के इरादे से सुनते हैं।

लेखक : स्टीफन आर. कवे
पब्लिशर : मंजुल प्रकाशन, नई दिल्ली
कीमत : 180 रुपये
पेज : 461

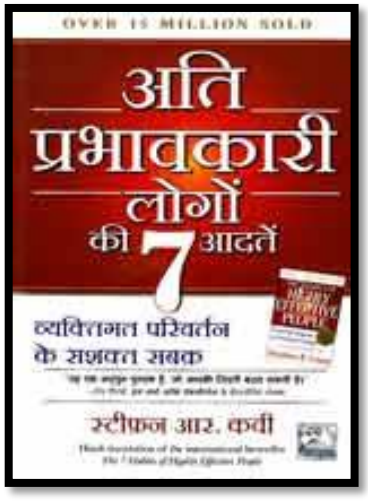

व्यक्तित्व विकास

डॉ. संध्या शर्मा
प्राचार्य के वि सै 31 चंडीगढ़
कोर्स निदेशक

व्यक्तित्व क्या है -

एक व्यक्ति विशेष का व्यक्तिगत दृष्टिकोण, शौक , व्यवहारिक प्रतिरूप, भावनात्मक प्रतिकियाएँ, सामाजिक भूमिका एवं समग्रता ।

यह निर्भर करता है ...

- सार्वजनिक बोलचाल
- शारीरिक हाव – भाव
- व्यवहार
- क्रोध प्रबंधन
- शारीरिक योग्यता
- भोजन से संबन्धित
- मित्र बनाने के कौशल
- व्यावहारिक कौशल
- विद्वता कौशल
- परेशानियों से लड़ने की क्षमता

यह व्यक्ति की वह गुणवत्ता है जिससे हम व्यक्ति के प्रति एक चुम्बकीय खिंचाव महसूस करते हैं। आपको इसकी आवश्यकता क्यों है... प्रथम अपने दैनिक जीवन में अपनी उपस्थिति की जाँच करें और इसका मूल्यांकन भी स्वयं करें ।

नकारात्मक भावनाओ पर नियंत्रण ....

श्रेष्ठता की भावना	हीन भावना
• उपलब्धियाँ स्वीकार करना • अपनी भावनाओं को स्वीकार करे और विरोधाभास का हिस्सा न बने • स्कारात्मक विशेषताओं को कमजोर न करे और दूसरों की कमियाँ बताएं • दूसरों की राय और विचारों पर समझौता करने को तैयार रहें	• उन सभी के साथ जुड़ना बंद करो जो आपको छोटा, असुरक्षित और अपर्याप्त महसूस कराते हैं • अपनी सीमाएं और अपनी योग्यता को जानें • खुद पर पैर रख कर दूसरों को चलने के लिए प्रेरित न करें • पता करें की आप किसमे अच्छे हैं और क्या आप सबसे सर्वश्रेष्ठ कर सकते हैं
भय	तनाव
• छोटे छोटे प्रयास करें • सकारात्मक प्रेरणा प्राप्त करें • विफलता को नए प्रकाश के रूप मे देंखे • 'NOW' की शक्ति को पहचाने (no other way) • 5. FEAT:- FALSE EVEIDENCE APPEARING REAL	• एक समय पर एक ही काम • साधारण क्रिया प्रणाली • कार्य को शांतिपूर्वक करें • रचनात्मक बनें • व्यवस्थित रहें

जब भी आपको समूह मे पहले बोलने के लिए कहा जाता है, क्या आपके पेट में तितलियाँ उड़ने लगती हैं ?क्या आप आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त कर सकतें हैं ?

आत्मविश्वास को कैसे बढ़ाएँ

- ✓ अपने बारे मे सकारात्मक सोंचे .
- ✓ यथार्थवादी लक्ष्यों को निर्धारित करे
- ✓ स्वयं की प्रसंसा करें जब भी आप कुछ अच्छा करें
- ✓ अपने विचारों के प्रति जागरूक रहें
- ✓ स्थिति के बारे में तार्किक सोचें, प्रतिक्रिया न करें
- ✓ अपनी ताकत पर ध्यान केन्द्रित करें
- ✓ मुखर होना सीखें

मुखरता :
क्या आपमे दूसरों के अधिकारों और भावनाओं का उल्लंघन किए बिना एक खुले और ईमानदार तरीके से अपनी आवश्यकताओं, भावनाओं, और विचारों को व्यक्त करने की क्षमता है?
मुखरता सकारात्मक परिणामों का उत्पादन करती है परिणामस्वरूप

- आत्मविश्वास जागता है।
- आदर दिलाता है।
- दूसरों से मान सम्मान मिलता है।
- संचार कौशल को बढ़ाता है।
- निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।
-

पारस्परिक सम्बन्धों को बेहतर कैसे बनाएँ ?

- दूसरे की बातों को सुने और समझें
- भावनाओं को व्यक्त करना सीखें
- तारीफ करना ना भूलें
- प्रोत्साहित करें
- सहयोग की भावना रखें
- हँसमुख रवैया रखें

अपनी कमजोरियों और ताकत को जानें

समय प्रबंधन एक व्यक्तिगत उपलब्धि , कहाँ हैं आप?

- 20% लोगों को लगता है की उनके पास समय की कमी है, और समय प्रबंधन से इसका हल निकालते हैं।
- 10% लोगों को लगता है की उनके पास समय की कमी है और दूसरों की मदद पाने के लिए उत्सुक रहते हैं।
- 70% लोगों को ये लगता है कि उनके पास समय कि कोई कमी नहीं है पर फिर भी वो दूसरों कि बातों का बुरा नही मानते और उनका समय प्रबंधन से कोई लेना देना नहीं है।

अपने जीवन में संतुलन लाइए :

- संतुलित जीवन अति आवश्यक है।
- जीवन के प्रत्येक पहलू को पहचानें।
- कार्य के कारण मुझे परिवार / व्यक्तिगत जीवन के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल रहा है।
- दिन का 80% काम / स्कूल / कॉलेज में खर्च होता है।
- काम को सही तरीके से करें गलत तरीके न अपनाएँ।
- जीवन को नियंत्रित कर के चलें परिस्थितियों से प्रेरित न हों।
- जीवन की यात्रा का आनंद ले: प्रतिदिन, भविष्य में एक सम्पूर्ण दिन का इंतजार न करें।
- जीवन के पहियों में सही संतुलन बनाए रखें ।

समय का प्रबंधन

- चीजों को सूचीबद्ध करें
- प्राथमिकताओं को जाने
- ऐसा क्यों हुआ- जाने
- विचलन का मूल्यांकन करें

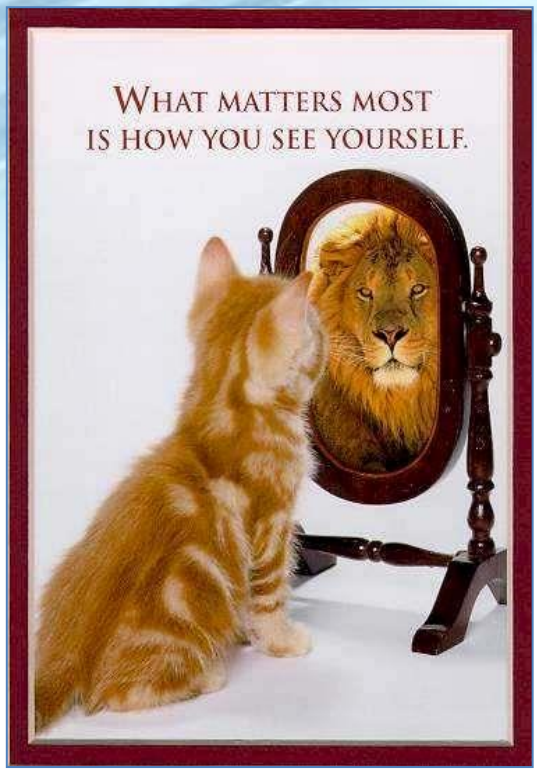

धारणा बनाम वास्तविकता

सम्प्रेषण कौशल

डॉ. संध्या शर्मा
प्राचार्य के वि सै. 31 चंडीगढ़
कोर्स निदेशक

प्रभावी बातचीत की कला आपके सफलता के प्रतिशत को लगातार बढाती है। अच्छी सम्प्रेषणीयता होना आपको हर जगह एक स्थान दे देता है,फिर चाहे वो आपकी व्यक्तिगत ज़िंदगी हो या व्यावसायिक ज़िंदगी। सीधे शब्दों में कहें तो आपकी सफलता की संभावना बढ़ जाती है ।

प्रभावी बातचीत के लिए निम्नलिखित पाँच सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं । इसे अंग्रेज़ी के SKILL शब्द से ले सकते हैं

S- Supportive Talker
K- Knowledgeable individual
I- Intelligent questioner
L- Logical Start & End
L- Lovely Listener

- Supportive Talker / बातचीत में सहयोगी और प्रेरित करने वाला

बातचीत की कला का यह प्रमुख भाग है। जिसमें हमें दूसरों को बोलने का मौका देना, उन्हें बोलने के लिए हमेशा प्रोत्साहित करना चाहिए और ये सफल वक्ता होने की सबसे बड़ी खूबी मानी जाती है। यदि आपको सामने वाले को सही से जानना है तो उसे बात करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

- Knowledgeable Individual / जानकारी से भरपूर –

आप प्रभावी ढंग से तभी बात कर पायेंगे जब आपके पास बोलने के लिए विषय वस्तु हो। अपना ज्ञान बढाइए, इसलिए अपने विषय पर पकड़ बनाये रखने के लिए उससे संबंधित पुस्तकें पढ़ें व जानकारी प्राप्त करें ।

- Intelligent Questioner / बुद्धिमान प्रश्नकर्ता

ही समय पर सही प्रश्न पूछना एक बड़ा गुण है, ये दर्शाता है कि न आप एक अच्छे श्रोता है, बल्कि आप वक्ता को ध्यान से सुनकर उसका सम्मान भी करते हैं।
कुछ प्रमुख करण जिससे पता चलता है की प्रश्न करना कितना जरूरी है:-

1. यदि आपको कोई बात जाननी है तो प्रश्न कीजिए ।
2. यदि आपको सामने वाले की मन की स्थिति समझनी है तो प्रश्न कीजिए।
3. यदि आपको अपनी बातों पर हाँ या ना कहलवाना है तो प्रश्न कीजिए।

4. यदि आपको सामने वाली की अपेक्षाएँ या समस्याओं से रूबरू होना है तो प्रश्न कीजिए।
5. यदि आपको विश्वास दिलाना है कि आप उसकी बातों में दिलचस्पी दिखा रहे हैं तो प्रश्न कीजिए।

- Logical Start & End / तार्किक शुरूआत और अंत-

बातचीत को शुरू करना एक बहुत मुश्किल काम माना जाता है। क्योंकि बातचीत शुरू करना भी एक कला है। इसमें सही विषय चुनकर आगे बढ़ना होता है। जितना महत्वपूर्ण बातचीत का आरम्भ करना रहता है उतना ही महत्वपूर्ण रहता है बातचीत का अंत करना। और साथ ही सारांश में उसे समाप्त करके अपने उद्देश्य की प्राप्ति करना।

- Lovely Listener / प्यारे श्रोता-

परिवार, समाज, रिश्तेदारों में लोकप्रिय होने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप एक अच्छे श्रोता बनिए,जो दूसरों का कहा सुनकर अपनी ख़ुशी भी जाहिर करता है,अपना दुःख भी प्रकट करता है और जो कोई बात समझ न आने पर सवाल भी पूछता है।

अंत में कुछ प्रभावशाली नियम जो आपको सुनने के समय याद रखने हैं:-

1.सारा ध्यान सुनने पर लगाएँ और यह तभी होगा जब आप अपने पास के व्यवधान को किनारे कर देंगे, जैसे कि मोबाइल, टीवी इत्यादि।

2.बीच में हस्तक्षेप न करें, नहीं तो सामने वाला अपने विषय से भटक सकता है।

3.पूरी बात सुनें, बिना पूरी बात सुनें अपना मत न रखें।

4.बीच-बीच में प्रश्न पूछें, जहाँ भी आपको शंका हो।

5.बातचीत करते वक्त अपने देह भाषा का सही इस्तेमाल करें।

6.सहानुभूति और समझदारी का परिचय दें। यह जताएँ कि आपने उनकी बातों को गंभीरता से सुना है।

हिन्दी विषय समिति की बैठक

डॉ. संध्या शर्मा
प्राचार्य के वि सै. 31 चंडीगढ़ एवं
कोर्स निदेशिका

हिन्दी विषय समिति की बैठक प्रतिमाह अंतिम कार्यदिवस पर आयोजित की जाती है। शिविर निदेशक डॉ. संध्या शर्मा जी ने हिंदी विषय समिति की बैठक के प्रारूप एवं उद्दे श्य पर अपने विचार व्यक्त किए। इस पर शिक्षको से चर्चा करते हुए उन्होने इस के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला। मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं -

1. विषय समिति की बैठक में हिंदी पढ़ाने वाले सभी प्राथमिक शिक्षक (यदि संभव हो सके तो),प्र.स्ना.शि.हिंदी, प्र.स्ना.शि.संस्कृत एवं स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी एक साथ बैठें एवं आवश्यकता पड़ने पर अन्य विषयों के शिक्षकों को भी ज्ञानात्मक विमर्श हेतु सम्मिलित करें । सभी अपने अनुभ व सांझा करें, आत्मावलोकन करें तथा एक दूसरे के शिक्षण को बेहतर बनाने में अपना सकारात्मक योगदान दें।
2. हिंदी शिक्षक का दायित्व है विद्यार्थी में भाषा- कौशल ,अभिव्यक्ति क्षमता एवं व्य क्तित्व का बहुमुखी विकास करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति कैसे हो ,इन पर विषय- समिति बैठक में चर्चा की जाए । कक्षा में शिक्षक की प्रस्तुति आदर्श होनी चाहिए। डायरी में इसकी योजना बनाई जाए।
3. लिखने – पढ़ने में कमज़ोर बच्चों का ज़िक्र किया जाए । उनसे कहाँ, कौन –सी गलतियाँ हो रहीं हैं , उन पर चर्चा की जाए तथा उनकी कमियों को सुधारने के लिए योजना बनाई जाए। अगली बैठक में कार्यान्वयन के नतीजे का आकलन किया जाए ।
4. शिक्षण में नवाचार एवं नए प्रयोगों पर सब मिलकर अपने –अपने सुझाव दें , नए शिक्षण तकनीक के वीडियो ऑनलाइन देखें । एक– दूसरे के आदर्श पाठ प्र स्तुति से शिक्षण को प्रभावशाली , रोचक एवं बेहतर बनाने के लिए सूत्र सीखें ।
5. विभिन्न पाठों के लिए अलग- अलग शिक्षण – विधि तय करे। परियोजना एवं समूह कार्य का प्रारूप तय किया जाना चाहिए ।
6. अगले माह में किए जाने वाले कार्यों की वरीयता वार योजना बनाई जाए। गत माह में किए गए कार्यों की प्रतिपुष्टि ली जाए तथा उन पर विचार भी किया जाए ।
7. परीक्षाफल का प्रश्नवार विश्लेषण करें। अगले प्रश्नपत्र का पाठ्यक्रम ,प्रारूप एवं अंक योजना तय करें ।
8. बच्चों में सृजनात्मकता, भाषा–कौशल ,साहित्यिक अभिरुचि के विकास के लिए योजना बनाएँ,सुझावों का आदान–प्रदान करें ।
9. सी.बी.एस.ई., राजभाषा, के.वि.एस. से समय – समय पर प्राप्त पत्रों एवं निर्देशों की चर्चा करके उनके कार्यान्वयन की योजना बनाई जानी चाहिए ।
10. प्रार्थना–सभा, पाठ्यसहगामी क्रिया –कलापों की गुणवत्ता को बढ़ाने के साथ ही बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए रणनीति तैयार की जाए।

जन संचार के माध्यम

सुरेश कुमार
प्रभारी प्राचार्य
सह कोर्स निदेशक

प्रिंट माध्यम : मुद्रित माध्यम , यही माध्यम जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है। मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई। लेकिन आज जिस छापेखाने को हम देखते हैं, उसका श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। यूरोप के पुनर्जागरण में छापेखाने की अहम् भूमिका है। भारत में पहला छापा खाना 1556 में लगा।
मुद्रित माध्यमों की विशेषताएँ –

- यह दस्तावेज के रूप में सदियों तक रखा जा सकता है।
- यह लिखित भाषा का विस्तार है।
- मुद्रित भाषा की तीसरी विशेषता यह चिंतन , विचार और विश्लेषण का माध्यम है।
- मुद्रित माध्यम की सीमा – यह निरक्षरों के लिए किसी काम की नहीं।
- मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :
- लेखन में भाषा व्याकरण वर्तनी और शैली का ध्यान रखना चाहिए। प्रचलित भाषा पर जोर रहता है।
- समय सीमा और आबंटित जगह के अनुशासन का ध्यान रखना अति आवश्यक है |
- लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों के लिए कोई सम्भावना नहीं होनी चाहिए।
- लेखन में सहज प्रवाह होना जरुरी है।

रेडियो :

- यह श्रव्य माध्यम है। यहाँ सारा खेल ध्वनि , स्वर और शब्दों का है।
- यहाँ रिसीवर श्रोता है सो पत्रकार को श्रोताओं की रूचि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- रेडियो में श्रोता के पास बटन है, यदि उसकी रूचि का संचार या कार्यक्रम नहीं है तो वह तुरंत बंद कर देगा।
- यहाँ अख़बार की तरह न्यूज़ बुलेटिन या किसी भी कार्यक्रम को पलटा के नहीं देखा जा सकता। वस्तुत: यह एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। यहाँ तस्वीरों का महत्व है।
- उल्टा पिरामिड : रेडियो समाचारों की संरचना भी अखबारों या दूरदर्शन की तरह उल्टा पिरामिड की तरह ही होती है। उल्टा पिरामिड शैली में जो सबसे महत्वपूर्ण संचार होता है वो सबसे पहले आता है। उसके बाद घटते महत्व से समाचारों को क्रम दिया जाता है। यह तीन हिस्सों में विभाजित होता है। संचार के इंट्रो, बाडी और समापन।
- इसमें कोई निष्कर्ष नहीं होता।

दूरदर्शन :
फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज , ड्राई एंकर , फ़ोन इन , एंकर विजुअल , एंकर बाईट , लाइव , एंकर पैकेज।

- फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज : कम से कम शब्दों में सबसे बड़ी खबर जो मिडिया ने ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचानी है |
- ड्राई एंकर : इसमें एंकर रिपोर्टर के आधार पर मिली जानकारी और उपलब्ध आंकड़ों को लेकर सीधे ही पब्लिक से जुड़ता है और कहाँ क्या कब कैसे हुआ यह तब तक बताता है जब तक घटना स्थल की तस्वीरें नहीं आ जाती।
- फोन इन : इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाये दर्शको तक पहुंचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना स्थल पर मौजूद होता है। वहां से वह जानकारी देता है।

- एंकर विजुअल : जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं तो उन दृश्यों के आधार पर न्यूज लिखी जाती है। जिसे एंकर पढता है |
- एंकर बाईट : बाईट यानी कथन : टेलीविजन लाइन में बाईट का बहुत महत्व होता है। टी वी में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए सम्बन्धित बाईट दिखाई जाती है |कसी घटना की सूचना देने और और उसके दृश्य दिखने के साथ ही इस घटना के प्रत्यक्ष दर्शियों को दिखा कर सुना कर खबर की प्रमाणिकता को पुष्ट किया जाता है।
- लाइव : किसी खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण।
- एंकर पैकेज : किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का एक माध्यम एंकर पॅकेज है। इसमें सम्बन्धित घटना से जुड़े दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाईट ,ग्राफिक्स के जरिये सूचनाओं की प्रस्तुति होती है।

  भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता: भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता का दौर 1993 से माना जा सकता है। और दूसरा दौर 2003 से। आज पत्रकारिता की दृष्टि से देश के तमाम पात्र इन्टरनेट पर सक्रिय हैं। हिंदी का जाल बहुत अधिक फैला है। इस सब जाल में तमाम किस्म की छोटी बड़ी पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

  समाचार के छ: ककार = कब, क्यों, कैसे, क्या, कौन, कहाँ, कब ?

  फीचर क्या है ? अखबारों में समाचार के इलावा बहुत सी ऐसी सामग्री होती है जो पत्रकारीय लेखन में आता है |

  फीचर –
- एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठको को सूचना देने का तो है ही, इसके साथ-साथ शिक्षित करते हुए मनोरंजन करना भी है।
- फीचर समाचारों की तरह त्तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं करवाता और न ही आलेख/निबंध की तरह शुष्कता लिए होगा।
- यहाँ लेखक अपना विचार या मत भी डाल सकता है। वह अपने दृष्टिकोण से विषय को देख सकने की आज़ादी ले सकता है। अपनी राय और भावनाएं व्यक्त कर सकता है।
- फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली नहीं हो सकती।
- लेखन का कोई एक निश्चित फार्मूला नहीं है।
- हाँ इसकी शैली काफी हद तक कथात्मक हो सकती है।
- फीचर की भाषा कलिष्ट न हो कर सरल रूपात्मक व् मन को छू लेने वाली आकर्षक हो सकती है। जबकि आलेख और समाचारों में ऐसा नहीं होता। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि फीचर की भाषा को अत्यधिक आलंकारिक बना कर दुरूह कर दिया जाये।
- इसकी कोई शब्द सीमा भी नहीं होगी। यह २५० से २००० शब्दों तक हो सकते हैं।
- एक अच्छे रोचक फीचर के साथ फोटोग्राफ रेखांकन और ग्राफिक्स भी लगाये जा सकते हैं। हलके फुल्के विषयों से लेकर गंभीर विषयों तक भी फीचर लिखे जा सकते हैं।
- दरअसल फीचर एक तरह का ट्रीटमेंट है जो आम तौर पर विषय और मुद्दे की जरुरत के अनुसार विस्तार लेता है।
- फीचर के आखरी हिस्से में उनका भविष्य और योजनाएँ फोकस करनी चाहिए। चुनौतियाँ उनसे निपटने की तैयारी को दिखा सकते हैं।
- लेकिन असली तैयारी होती है प्रारम्भ, मध्य और अंत को सहजता से एक संभवित ढांचे में ढालना।

- हर पेराग्राफ अपने पहले वाले पेराग्राफ से अच्छी तरह जुड़ता हो यानि पिछली बात को आगे बढ़ाता हो | जैसे किसी व्यक्तित्व पर फीचर लिख सकते हैं -
- अमृता प्रीतम पर ...नाम दे सकते हैं कोई भी। यथा – सुल्फे की लाट।
- साहिर लुधियानवी पर ...चेचक के दाग से भरा चेहरा कुछ बोलता है। या ये दाग अच्छे लगते हैं।
- गाँधी पर ...चश्मा देखता है लाठी बोलती है।
- किसानो पर फीचर हो तो ...अपने खेतो की ओर।
- मंटो पर लिखना हो तो ...नंगे अफसाने और मंटो ।
- मोबाइल में कैद होती जिंदगी।
- नायक से महानायक (अमिताभ बच्चन)
- पेड़ों की कहानी उनकी ज़ुबानी।
- तवायफों की जिंदगी पर ...जाएँ तो जाएँ कहाँ ?
- झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाले बच्चों पर
- छोटी उम्र के बड़े सपने।
- अपने स्कूल की लाइब्रेरी पर ....अलमारी से झांकती पुस्तकें ,
- खेल के मैदान पर ...हम हैं मुश्ताक और वो बेज़ार।

रिपोर्ट : अख़बारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के आलावा गहरी छानबीन , विश्लेष्ण और व्याख्या के अधर पर विशेष रिपोर्ट तैयार की जाती हैं। किसी घटना या मुद्दे की गहरी छान बीन के बाद ही रिपोर्ट को तैयार किया जा सकता है |तथ्यों के विश्लेष्ण उसके नतीजे प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है। विशेष रिपोर्ट भी कई प्रकार की होती है। खोजी रिपोर्ट , इन डेप्थ रिपोर्ट विश्लेष्णातमक रिपोर्ट, विवरणात्मक रिपोर्ट।

- इन् डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। और उसके आधार पर किसी घटना समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।
- आम तौर पर रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है दूसरी तरफ कई बार फीचर शैली में भी लिखा जा सकता है।
- कई रिपोर्ट बहुत बड़ी भी हो सकती हैं और कई किस्तों में जिनको लिखा जा सकता है।
- भाषा सरल सहज होनी चाहिए |

स्तम्भ लेखन : स्तम्भ लेखन भी विचारपरक लेखन का ही एक रूप है।

- कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन शैली होती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता देखकर समाचार पत्र उन लेखको को नियमित स्तम्भ लेखन का जिम्मा दे देते हैं। स्तम्भ का विषय चुनने और अपने विचार व्यक्त करने के लिए लेखक स्वतंत्र होता है।
- यही कारण है की स्तम्भ लेखक के नाम पर ही जाना जाता है और पढ़ा जाता है।
    - जैसे कुलदीप नैयर, एम् जे अकबर, विनोद दुआ, खुशवंत सिंह, कमलेश्वर जैसे लेखक स्तम्भ लेखन किसी न किसी अख़बार में करते रहे हैं।

समावेशी शिक्षा

सुरेश कुमार
प्रभारी प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय उभावल एवं
सह कोर्स निदेशक

भारतीय संविधान में जाति , वर्ग, धर्म, आयु, और लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का विभेद निषेध है। लोकतान्त्रिक समाज के लिए हमारा संविधान पूर्णत: सक्षम रूप से समावेशी शिक्षा की तरफ इशारा करता है। इस दृष्टि से हमारे द्वारा बच्चे को उनकी जाति , वर्ग, आयु और लिं ग के आधार पर देखने के स्थान पर एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखे जाना अनिवार्य है। इस सब से लोकतान्त्रिक समाज में बच्चे के समुचित समावेशन के लिए एक वातावरण निर्मित किया जा सकेगा। शिक्षा समावेशन की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण औज़ार है। शिक्षा एक मात्र वह प्रक्रिया है जिससे समावेशन में बाधक तत्वों को दूर कर बच्चे का समुचित विकास बिना किसी भेद और विभेद के किया जा सकता है।

समावेशन का अपने आप में कुछ खास अर्थ नहीं है। समावेशन के चारों तरफ जो वैचारिक , दार्शनिक शैक्षिक ढांचा है वही समावेशन को परिभाषित कर ता है। समावेशन की प्रक्रिया में बच्चे को न केवल लोकतंत्र की भागीदारी के लिए सक्षम बनाया जा सकता है बल्कि यह सीखने एवं विश्वास करने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है कि लोकतंत्र को बनाये रखने के लिए रिश्ते बनाना, अंत:क्रिया करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। एन.सी.एफ 2005 पृष्ठ (96)

बच्चे समाज में जो मूल्य , अनुभव और संस्कार प्राप्त करते हैं वह विद्यालय की दैनिक गतिविधियों में परिलक्षित होते हैं। यह असमानताएं जहाँ बच्चे के जीवन को प्रभावित करती हैं वहीँ हमारे संविधान की आत्मा लोकतंत्र को भी आहत करती हैं। विद्यालय में सच्चे शिक्षण की मौलिकता पर प्रहार करती है।

बच्चे का अधिकतम समय परिवार और विद्यालय में बीतता है। इसलिए हम इन दो इकाईयों को समावेशन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक मान सकते हैं।

परिवार

एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के सामने दो प्रकार की परि स्थितियां पैदा हो सकती है। यही परिवार सकारात्मक सोच वाला है तो बच्चा मजबूत इरादों और विश्वास वाला बनेगा। नकारात्मकता और हीन भावना उस से कोसों दूर होगी। अगर परिवार की सोच बच्चे की अक्षमता पर तरस खाने वाली होगी तो बच्चा दब्बू और हीन भावना का शिकार होगा। ब च्चे के परिवार की स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर बच्चे के सबल और नि:बल होने का निर्णय होता है।

उदाहरणार्थ : -

क्या परिवार के समस्त फैसलों में सबकी सहभगिता होती है। यदि परिवार में कोई विशेष आवश्यकता वाला बच्चा भी है तो क्या उसकी सलाह भी उतनी ही मानी होती है जितनी अन्य सदस्यों की ?

क्या शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के प्रति परिवार का दृष्टिकोण पक्षपात पूर्ण तो नहीं है। समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के बच्चों के प्रति परिवार का दृष्टिकोण नकारात्मक या घृणा वाला तो नहीं है ?

क्या परिवार में लोकतान्त्रिक मूल्यों समानता, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता , न्याय एवं अस्मिता के लिए वातावरण है या नहीं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के व्यक्तित्त्व की विकास यात्रा उसके परिवार द्वार से ही प्रारम्भ होती होती है।

दो प्रकार के परिवार होते हैं :-

(क) अति संरक्षण प्रदान करने वाले परिवार :- इस तरह के दृष्टिकोण वाले परिवार बच्चे की समस्त रचनात्मकता और स्वनिर्भरता पर हथौड़े की तरह वार करता है। जिसका परिणाम समावेशी शिक्षा के अवरोध के रूप में सामने आता है।

(ख) अस्वीकरण वाले परिवार:- ऐसे बच्चो के प्रति परिवार का यह दृष्टिकोण दूसरा नकारात्मक चरम है। जब परिवार के मुखिया , वह चाहे माँ बाप ही क्यों न हो , कहने लगें कि तुम कुछ नहीं कर सकते। तब बच्चे के मन में यह बात घर कर जाती है कि सचमुच ही वह कुछ नहीं कर सकता। बच्चे के कोमल मन पर पड़ा यह नकारात्मक प्रभाव एक दिन उसकी हीन भावना बन जाता है।

यदि किसी परिवार में ऐसे बच्चे हैं जो विशेष आवश्यकता वाले हैं तब उनको कैसा वातावरण प्रदान किया जाये ?

आइये इसे करके देखें :-

क) बच्चे के समावेशन हेतु समाजीकरण के विभिन्न उपाय और उपादान उपलब्ध करवाएं।

ख) समावेशी शिक्षा का प्रारंभ बीज परिवार में हो रोपा जाता है उसे विश्वास और सकारात्मकता की खाद के साथ रोपें।

ग) समावेशी शिक्षा के लिए वातावरण पैदा करें।

घ) बच्चे में विशेष प्रकार के अनुभव , विश्वास संस्कृति और संस्कार उपलब्ध करवाएं जिससे से समावेशन शिक्षा का वातावरण निर्मित हो सके।

शैक्षिक इकाई :- शिक्षा में समावेश का आधार क्या होना चाहिए ?

समावेश का आधार तो दर्शन और विचार ही होगा। कई लोग विशेष रूप से ऐसे बच्चों के लिए विशेष विद्यालयों की सिफारिश करते हैं जो कतई गलत विचार है। वस्तुत : हमें ऐसे बच्चो को उन्ही के तरह के बच्चों में सक्षम नहीं बनाना बल्कि समाज और राष्ट्र की मुख्य धरा से जोड़ कर देखना है। इस लिए मानसिक शारीरिक रूप से विभिन बच्चों को समाज में दूसरे बच्चों के साथ ही शिक्षण देना होगा। उन्हें मिल कर सृजन के सामान अवसर देने होंगे। उन पर आवश्यकता से आधिक दया भावना दिखलाएंगे तो शर्तिया ही वे हीन भावना का शिकार होते चले जायेंगे। उनमे हीन भावना भरने से बचाना होगा। कक्षा में उचित वातावरण प्रदान करते हुए उनके मन में आत्मसम्मान आत्मविश्वास ,सकारात्मक सोच की भावना का प्रसार करना परम आवश्यक है।

कुछ बातें जो हम कर सकते हैं :-

क) उस विशेष बच्चे को स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए अभिप्रेरित कर सकें।

ख) उनकी सोच और तौर तरीको में विविधता लायें।

ग) सीखने सिखाने के उचित अवसर प्रदान करें।

घ) सीखने की प्रक्रिया में उसे बिना जताए उसकी अवधारणा बनायें की वह भी दूसरे बच्चों की तरह है। उसमे और उनमे कोई फर्क नहीं है। शरारत करने पर दुसरे बच्चों की तरह उस को भी डांट पड़ सकती है।

ङ) बच्चों के सीखने के तौर तरीको में भिन्नता हो सकती है। उनके साथ अधिकतम प्रयोग करने चाहिए ताकि वे अधिकतम अधिगम कर सकें।

च) वह जो याद करता है उसको अपने परिवेश से जोड़ कर देखता है।

छ) सीखने की प्रक्रिया न केवल विद्यालय में चलती है बल्कि बाहर समाज में भी चलती है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि सीखने की प्रक्रिया बच्चा सहज रूप में अपनाए और अपनी समझ विकसित करे।

समावेशन नीति को व्यापक रूप में लागू करने की आवश्यकता है। साथ ही इसमें दो चरण बेहद महत्वपूर्ण होंगे।

क) विद्यालय में बच्चे को समझना। प्रत्येक बच्चा अलग है। उसकी समझ का स्तर भी अलग है। उसकी सामाजिक, भाषायी, शारीरिक व् मानसिक क्षमता में बहुत विविधता है। इसी प्रकार उनकी क्षमताओं के अनुसार ही उनके अधिगम ग्रहण करने की विधि में भी भिन्नता होनी चाहिए। इसलिए एन सी ई आर टी जैसे संस्थानों को आगे आना चाहिये।

ख) बच्चे की आवश्यकता अनुसार विद्यालयी पाठ्यक्रम का अनुकूलन करना :-हमें कक्षा को समग्र ता से समझने की ज़रुरत है। प्रत्येक बच्चे को सीखने सिखाने की एक स्वतंत्र इकाई के रूप में स्वीकारना जरूरी है ।

ग) कक्षा में या विद्यालय में सभी बच्चों को सामान अवसर नहीं मिलते यहाँ यह सच्चाई के साथ स्वीकार करना पड़ेगा कि किसी भी विद्यालय में कुछ विशेष प्रतिभा शाली बच्चो को ही अपनी प्रतिभा दिखाने के अधिकतम अवसर मिलते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अगर गृह कार्य नहीं करके लाते तो उन्हें विशेष छूट देकर अध्यापक उन्हें रहम का पात्र बना देता है और वह बच्चा अधिक अकेला हो जाता है। सीखना विद्यालय में बच्चों के लिए सवानुशासित होना चाहिए। अनुशासन थोपा नहीं जाये।

विद्यालय में समावेशी शिक्षा में बाधा पहुँचाने वाले त्तव :-

क) बहुपरती शिक्षा प्रणाली : हमारी शिक्षा समावेशी की बजाय बहिषकरण (exclusion) को बढ़ावा देती है।

भेदभाव पूर्ण और असमानता पर आधारित शिक्षा प्रणाली बच्चे को हाशिये पर धकेल देती है। (exclusion) बहिष्करण शिक्षा दो स्तरों पर संवेदनशील समूह हैं।

१) प्रथम –आर्थिक , सामाजिक , लैंगिक आधार।
२) द्वितीय – शारीरिक व् मानसिक रूप से विशेष जरूरतों वाले बच्चे।

समावेशी समाज का निर्माण करने में शिक्षा का बहुत योगदान है। समावेशी शिक्षा का एक व्यापक लक्ष्य यह भी प्रतीत होता है कि एक साथ शिक्षित होने पर भविष्य में समाज के भीतर विशिष्ट आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के सरोकार को आम लोग बेहतर ढंग से समझ सके। समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के पीछे एक अपने तरह का राजनीतिक अर्थशास्त्र भी है जो भूमण्डलीकरण या उदारीकरण की प्रक्रियाओं से प्रेरित है। विकलांगों की कम से कम पांच श्रेणियां है- दृष्टिबाधित , अस्थिबाधित , मूक बघिर , मंद्बुद्धि तथा स्वालीनता से ग्रसित लोगो को पढ़ाने के लिए अलग अलग नामों से अंशकालीन शिक्षक व् शिक्षिकाएं रखी जाती हैं। इनको अधिकतर राज्यों में न्यूनतम मजदूरी से भी कम पैसा दिया जाता है। जब ऐसा होगा तो प्रशिक्षण के नाम पर क्या होगा आप जान सकते हैं।

मेरे एक मित्र हैं दृष्टि बाधित हैं और संगीत के प्रोफ़ेसर हैं। उनके अनुभव जानने पर बहुत सी चीजो का पता चला। विद्यार्थी के तौर पर अस्थिबाधित और दृष्टि बाधित बच्चे ही अधिक मिलते हैं।आम लोगों में विकलांगों और विशेषरूप से दृष्टिबाधित लोगों के प्रति बहुत तरह के पूर्वाग्रह हैं। कई बार किसी प्रतियोगिता में आपको पुरस्कार मात्र इसलिए दे दिया जाता है कि आप दृष्टिबाधित हैं या विकलांग हैं।यही बात उस विद्यार्थी के लिए सबसे अधिक हानिकारक है।विकलांग या नेत्रहीन को भी शरारत करने का पूरा अवसर दिया जाना चाहिए। उसे भी दूसरे बच्चो की तरह शरारत करने पर डांट पड़नी चाहिए ताकि वह भी अन्य बच्चो की तरह खुद को उनके समकक्ष समझे।उसे भी चुटकले सुनाने और ग़ज़लें सुनाने का हक़ है।वह भी पैरोडी बनाये।एक दृष्टि बाधित भी फिल्म देखे। वह सुन कर ही देखता है।सम्वेदनशील अध्यापकों के अतिरिक्त बहुत कम अध्यापक ही ऐसे बच्चों का ध्यान रखते हैं।अब ऐसे में यह सवाल वाजिब हो जाता है कि विशिष्ट शिक्षा प्राप्त किये अध्यापको की भी आवश्यकता रहती है। लेकिन यह बड़ा सवाल है कि आज की यह व्यवस्था विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चो को समाविष्ट करेगी या शिक्षा से अलग थलग कर देगी।

अपने पन्द्रह साल के शिक्षण अनुभव के अधार पर उन्होंने बताया कि सामान्य पाठशालाओं में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे बहुत कम आते हैं जो आते हैं वे भी अधिकतर दृष्टिबाधित ही होते हैं। यह बच्चे पढाई में औसत दर्जे के होते हैं। अन्य सामान्य बच्चे या तो उनपर तरस कहते हैं या मजाक उड़ाते हैं तरह तरह के नामों से विशेषणों से चिढाते हैं।

क्या किया जाए :-विकलांगता तब तक बाधा बनती है , जब तक हमारा इरादा मजबूत नहीं होता। उनको समझा जाये। साथ ही कुछ अच्छी फ़िल्में और वृत्त चित्र दिखाए जाये जिनसे उनका जीवन के प्रति आत्मविश्वास मजबूत हो। इन बच्चो के अभिभावकों को सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जाये। बच्चो से अधिक अभिभावकों की काउंसलिंग जरूरी है। जिस समाज में लोग अधिकतर समय मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की उधेड़बुन में लगे रहते हों वे लोग इन मुद्दों पर संवेदनशील कैसे हो सकते हैं। सब को अपनी अपनी पड़ी है। एक ठोस शुरुआत के लिए समझदार और संवेदनशील लोगों को सामने आना चा हिए। हमारी सरकारों की तरफ से जो अभियान चल रहे हैं वे पर्याप्त नहीं हैं। इस मुद्दे को पहल के आधार पर लेना चाहिए। समावेशी शिक्षा निश्चित रूप से प्राथमिक स्तर के विशिष्ट प्रशिक्षण के बाद ही दी जानी चाहिए। तभी इसके सुखद परिणाम मिल सकते हैं। इधर केंद्रीय वि द्यालय संगठन में समावेशी शिक्षा के लिए विशेष कदम उठाये जा रहे हैं। अध्यापको को विशेष रूप से इस विषय पर जानकारी दी जा रही है। प्रत्येक कार्यशाला और सेमिनार में इस विषय की गंभीरता को देखते हुए विशेष कार्य किये जा रहे हैं और योजनाए लागू की जा रही हैं। प्रत्येक स्कूल में रैंप और प्रसाधन की व्यवस्था की गई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय पहल के आधार पर काम कर रहा है। लेकिन बावजूद इसके अभी इस सम्मत बहुत काम करना बाकी है।

चित्र साभार http:www.osisa.org/education/swaziland/inclusive-education-swaziland

आओ सुनो ...यह चुप कुछ बोल रही है !

सुरेश कुमार

उप प्राचार्य एवं सह कोर्स निदेशक

आज की भाग दौड़ की दुनिया में जहाँ हर ओर आपाधापी मची है । हमको केवल और केवल अपना ही दिखाई देता है । हमारे पास वक्त नहीं है, ठहर कर किसी की बात सुनने का । किसी की तो क्या हम अपने अंत:करण की ही बात कहाँ सुनते हैं । ऐसे समय में जब कोई आपकी बात सुने, आपके मन के आवेग और आवेश को समझे, आपके मानसिक दबाव का हिस्सा बने, आपकी छोटी बड़ी खुशियों में शामिल हो, वह पल बस उसी तरह होता है, ज्यों तपती धूप में किसी पेड़ की घनी छाया मिल जाये कहीं । प्यासे को जी भर पानी मिल जाये कहीं । खुश्क आँखों में मुहब्बत का जल छलक आये कहीं । किसी अनजाने रिश्ते में परिचय की मुस्कान मिल जाये कहीं । किसी पीड़ा को आराम आ जाये वहीँ, जहाँ ऐसा हो जाये ।

चलो अब इस संवाद को खोज लें किसी बच्चे की आँखों में जहाँ न जाने कितनी बस्तियां हैं जाने कितने दर्द ठहाके और कहानियां आपका इंतज़ार कर रहे हैं । बच्चे कुछ कहना चाहते हैं क्या कभी हमने सुना ? उस अंतिम बैंच पर बैठे बच्चे के मन की आवाज़ ? बाहर दीवार की तरफ मुंह करके खड़े बच्चे के मन के सवाल ? क्या कभी मापने की कोशिश की फुटबाल न खेल सकने वाले ,कविता न बोल सकने वाले दिव्यांग के मन की परवाज़ । आओ इनको इनकी दृष्टि से देखें ।

निदा फ़ाज़ली की पंक्तियाँ कितना कुछ कह गई :

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें

किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाए ।

अब यह जो वेदना है, इसको कौन समझेगा ? भागता दौड़ता हुआ जुगाड़ में पड़ा हुआ आम आदमी ? या किसी विशेष मकसद के लिए समर्पित अध्यापक ? अब यह विशेष मकसद क्या होगा ? यह विशेष उद्देश्य संवाद है । संवाद व्यक्ति और व्यक्ति के बीच । संवाद बच्चे और व्यक्ति के बीच । इस संवाद का उद्देश्य अव्यक्त अभिव्यक्ति का वह पहाड़ है जिसे व्यक्त कर चूर चूर करना है । अभिव्यक्ति कभी दीवारों से या मशीनों से नहीं होती । अभिव्यक्ति होती है आदमी और आदमी के बीच । संवेदना आदमी का एकमात्र ऐसा गुण है जो उसे इंसानियत के बहुत करीब ला देता है ।

प्रसिद्ध हिंदी लेखिका कृष्णा सोबती कहती हैं "लेखक से बड़े वे मूल्य हैं, जिनके लिए वह लिखता है। " लेखक बड़ा तो तब होता है जब उसके वह मूल्य बड़े हों जिनके लिए वह लिख रहा है ।

इसी प्रकार अध्यापक बड़ा तब बनता है जब वह उन मूल्यों के लिए लड़ता है जिन्हें वक्त की दीमक (मूल्यहीनता) धीमे-धीमे खा रही है । अध्यापक तब बड़ा होता है जब उसका शिष्य उसे अपना आदर्श मानने लगता है । बच्चा जब अध्यापक की शरण में आ कर सुरक्षित महसूस करे तो समझिये बच्चे आपके हुए और आप बच्चों के । बच्चे आपके दीवाने हो सकते हैं बस शर्त इतनी भर है कि आप उनकी बात सुने । जब वो गिरें तो आपका हाथ उनको उठाने के लिए सामने हो । जब वो निराश हों तो आपका सांत्वना का एक हाथ उनकी पीठ पर हो । मुझे वरिष्ठ हिंदी कवि नरेश सक्सेना की कविता की पंक्तियाँ याद आ रही हैं ।

पुल पर करने से पुल पार होता है
नदी पार नहीं होती
नदी पार नहीं होती नदी में धंसे बिना ।
शिक्षण एक ऐसी नदी है जिसमे धंसे बिना पार नहीं हुआ जा सकता ।

भाषा अध्यापक का ऐसे समय में दायित्व और अधिक बढ़ जाता है । जितनी सहजता से भाषा अध्यापक बच्चों के साथ संवाद स्थापित कर सकता है उतना अन्य विषय का अध्यापक नहीं । वस्तुत: शिक्षा का प्रथम सोपान ही संवाद और अभिव्यक्ति है । केन्द्रीय विद्यालय संगठन शिक्षण का एक ऐसा दरिया है जो अपना रास्ता खुद तय करता हुआ शिक्षा रूपी समन्दर में जा मिलता है । या कह लें कभी-कभी समन्दर भी नदी में मिल जाता है । शिक्षा शिक्षण एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं ।

कबीर की उलटबासियों की तरह ।

बरसे कम्बल भीजै पानी ।

शायर राजेश मोहन कहते हैं :

जिंदगी का अर्थ जब आवारगी में मिल गया

फिर समन्दर चल पड़ा, जा कर नदी में मिल गया ।

हिन्दी विषय के प्रति विद्यार्थियों का रुझान विकसित करने में शिक्षक की भूमिका

डॉ.मनोज कुमार गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक १,कोटा

एक बुरा शिक्षक - शिकायत करता है।
एक सामान्य शिक्षक - पढ़ाता है।
एक श्रेष्ठ शिक्षक - प्रेरणा देता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित है ।अतएव हिन्दी की उन्नति में ही हमारी उन्नति निहित है।सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकता के सूत्र में पिरो कर रख ने वाली हिन्दी राष्ट्रीय एकता के लिए अत्यावश्यक है । अतः हिन्दी की रक्षा करना , उसकी लोकप्रियता में वृद्धि करना हमारा नैतिक दायित्व बनता है । हिन्दी शिक्षक के नाते हमारे स्वयं के अस्तित्व के लिए भी हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति आवश्यक है ।

हिन्दी शिक्षकों को प्राय: इस समस्या का सामना करना पड़ता है कि हिन्दी विषय के अध्ययन में विद्यार्थी रूचि नही लेते तथा हिन्दी को एक भार के रूप में ग्रहण करते प्रतीत होते है ।तो आइये, हम हिन्दी की कक्षा को भी निम्न बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए रोचकता प्रदान कर सकते हैं ।

1. सर्वप्रथम यह सुनिश्चित करें कि कक्षा में प्रवेश करते समय सम्बंधित पाठ की पूर्ण जानकारी /तैयारी के साथ विद्यार्थियों से मुखातिब हों।उस पाठ के बारे में जानने की जिज्ञासा विद्यार्थियों में उत्पन्न करें ।

2. पठन-पाठन रुचिकर हो इस हेतु पाठ का प्रस्तुतीकरण भावानुकूल तथा रसानुकूल हो । विद्यार्थी एवं शिक्षक के जीवन के निजी अनुभव से तादात्म्य स्थापित किया जाये ।

3. क्या पढ़ाना है, के स्थान पर, कैसे पढ़ाना है तथा किसको पढ़ाना है । इस पर बल दिया जाये ।

4. पाठ को विद्यार्थियों के सहयोग से नाटकीय स्वरुप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है ।

5. पाठ के मूल कथ्य को वर्त मान से संदर्भित करते हुए उसकी प्रासंगिकता पर भी विद्यार्थियों से चर्चा की जा सकती है ।कक्षा में अन्त:क्रिया(interaction) आवश्यक रूप से होना चाहिए ।

6. कविता शिक्षण के दौरान कविता की पृष्ठभूमि,कवि का तात्कालिक परिस्थितियों के साथ सामंजस्य आदि की जानकारी के साथ भाव- साम्य एवं शब्द- साम्य की भी चर्चा कर विषय को रोचकता प्रदान की जा सकती है ।

7. कविता का भावानुरूप वाचन/गायन हो ,लय-सुर-ताल,आरोह-अवरोह के साथ रस सौदर्य की उत्पादक बनाकर प्रस्तुत की जाये ।

8. कक्षा शिक्षण के दौरान ।CT का प्रयोग –संदर्भित वीडियो क्लिप,पीपीटी कार्टून फिल्म,प्रसिद्ध कहानियों पर बनी फिल्मों पर चर्चा एवं उनका प्रदर्शन कर विद्यार्थियों का रुझान विकसित किया जा सकता है ।

9. कभी-कभी पढाए गए पाठ में से ही श्रुतिलेख करवाकर विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा का भाव उत्पन्न किया जा सकता है ।

10.विद्यार्थियों को समसामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करने , संवाद,वार्तालाप या समूह चर्चा के माध्यम से टीम वर्क की भावना विकसित की जा सकती है ।

11.कक्षा में दोहरान कार्य (revision) के दौरान पढाए गए पाठ के आधार पर वैकल्पिक प्रश्नों की (MCQ) प्रश्नोत्तरी का आयोजन कक्षा को रोचकता से भर देगा ।

12.पाठाधारित भाषा अध्ययन- प्रत्यय,उपसर्ग,मुहावरे अलग अलग करना ,अशुद्धि-संशोधन,सुलेख आदि कार्य भी करवाया जा सकता है ।

13.कक्षा में आवश्यकतानुसार शुद्ध उच्चारण/वाचन परम्परा निर्वाह करते हुए कभी-कभी उच्चारण संस्थान की भी चर्चा की जाये । यथा-श-स-ष का उच्चारण भेद स्पष्ट करें ।

14.भाषा शिक्षक के नाते प्रात:कालीन प्रार्थना सभा के कार्यक्रमों ,हिन्दी पखवाड़ा तथा अन्य प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनमें विश्वसनीयता पैदा की जा सकती है ।

15.भाषा के प्रति रुझान विकसित करने के क्रम में महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि विद्यार्थियों के बीच चर्चा की जाये कि कैरियर के किसी भी क्षेत्र में संप्रेषणीयता(communication skill) अत्यधिक महत्त्व रखती है और वह केवल भाषा के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है ।

संक्षेपत: उपर्युक्त बिन्दु एक शिक्षक के लिए सहायक मात्र हैं । चूँकि शिक्षक और उसमे भी भाषा शिक्षक, सृजनात्मकता का पर्याय होता है ।अतः देश-काल-परिस्थिति के अनुसार इन बिन्दुओं के प्रयोग में कमोबेशी की जा सकती है। शिक्षक यदि ठान ले तो कक्षा की रोचकता बढने के साथ विद्यार्थियों का रुझान भी विकसित हो सकता है । अंततः यही कहा जा सकता है कि –

तू तो सूरज है पगले, क्यों अंधकार से डरता है ।

तेरी एक किरण से ही जग को प्रदीप्त कर सकता है ॥

शिक्षण से पूर्व और शिक्षण के दौरान

सुनीता गुसांई

सह प्रशिक्षक हिंदी

पाठयपुस्तक पढ़ाने से पहले शिक्षक को निम्नलिखित बातों के बारे में जानना जरुरी है

1. पाठ्यपुस्तक किन सूत्रों पर तैयार की गई है ?
2. पाठयपुस्तक की विशेषता क्या है ?
3. आमुख के मुख्य अंश क्या हैं ?
4. पाठ्यांशों के भाव क्या हैं ?
5. पाठ्यांशों का संयोजन किस प्रकार है ?
6. किन शिक्षण विधियों का समावेश है ?
7. सूचना में किन अंशों पर चर्चा की गई है ?

शिक्षण-युक्तियाँ

- पाठ की आवश्यकता के अनुसार सहायक सामग्री तैयार करना जैसे : संदर्भ , आलेख , वीडियो , अभ्यास सामग्री आदि ।
- कुछ बातें हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यह है कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंठस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है , इसलिए चीज़ों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षिका के बीच निर्बाध संवाद ज़रूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज़्यादा स्पष्टता उनमें आ पाएगी।
- भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में किसी शब्द विशेष के प्रयोग पर निषेध को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं

चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना ज़रूरी है।

- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक- से-अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना ज़रूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का अधिकार और ज्ञान रखते हैं। उनकी रा य को प्राथमिकता देने और उसे बेहतर तरीके से पुनः प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहाँ बहुत उपयोगी होगी।
- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी ज़रूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षकों को अक्सर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा , जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखते , उसके कच्चे-पक्के वक्तव्य को मानक भाषा- शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देते हैं और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देते हैं। अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन तथा उसकी मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षकों के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षकों को एक निश्चित अंतराल पर नए- नए विषय प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है , जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की निस्सीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध- संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न ले। तैयार शु दा सामग्री के लोभ से , बाध्यतावश ही सही मुक्ति पाकर विद्यार्थी नये तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के यत्न में संलग्न होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार , संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्या र्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षकों को उचित हावभाव, मानक उच्चारण , बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए ज़रूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ । अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन- शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की

विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।

- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौ तिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षिक उनका कक्षा में अलग- अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सके।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश , साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ पाएँगे। इससे शब्दों की अलग- अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।
- कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार , ट्यूटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूहचर्चा, परियोजना, कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय- समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी विद्यालय में बुलाया जाए तथा उनकी देख- रेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ ।

संदर्भ : पाठ्यक्रम कक्षा ग्यारह एवं बारह , केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

मौखिक परीक्षा (श्रवण तथा वाचन हेतु) दिशा-निर्देश

श्रवण (सुनना) : वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना। 5 अंक

वाचन (बोलना): भाषण, सस्वर कविता-पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन। 5 अंक

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी: वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय ही होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) कौशल के मूल्यांकन के लिए और 5 वाचन (बोलना) कौशल के मूल्यांकन के लिए होंगे।

श्रवण (सुनना) कौशल टिप्पणी का मूल्यांकन:
परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। अध्यापक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण बोध् के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास रिक्तस्थान-पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य / असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं। प्रत्येक आधे -आधे अंक के लिए 10 परीक्षण होंगे।

मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) का मूल्यांकन:

1. चित्रों के क्रम पर आधरित वर्णन: इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि विद्यार्थी विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. किसी चित्रा का वर्णन: चित्रा लोगों या स्थानों के हो सकते हैं।
3. किसी निर्धरित विषय पर बोलना: जिससे विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सकें।
4. कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।

टिप्पणीः

- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को कुछ तैयारी के लिए समय दिया जाए।
- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धरित विषय परीक्षार्थी के अनुभव-जगत के हों। जैसेः कोई चुटकला या हास्य प्रसंग सुनाना।
- अथवा हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे हुए चलचित्र ;सिनेमा की कहानी सुनाना।
- जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ कर दें तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन ;इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं।

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
1. परिचित संदर्भो में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है किन्तु वह सुसम्बद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1. केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसम्बद्ध स्तर पर नहीं बोल
2. छोटे संबद्ध कथनों को परिचित संदर्भो में समझने की योग्यता है।	2. परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अध्कि जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है, अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है, जिससे प्रेषण में रुकावट

	आती है।
4. दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शु(ता से समझने के ढंग और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धरा-प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है। ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रुकावट नहीं आती।
5. जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है। वह उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, ऐसा करते समय वह केवल मामूली गलतियाँ करता है।

स्रोत : पाठ्यक्रम 2017 – 2018 , केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

अपठित गद्यांश तथा पद्यांश

सुनीता गुसांई

सह प्रशिक्षक हिंदी एवं संसाधक

किसी भी भाषा के क्रम में तथा ज्ञान – विज्ञान के विस्फोट के इस युग में जानकारी प्राप्त करने में पठन कौशल एक विशिष्ठ भूमिका निर्वहन करता है । विभिन्न प्रकार के विषयों की सामग्री को आत्मसात करने के लिए आवश्यकहै कि छात्र उस सामग्री को पढ़े, पढ़कर समझे, उस पर चिंतन –मनन करे और फिर उस पर शुद्ध, स्पष्ट एवं सुसंगत रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सके। इसके लिए अर्थग्रहण का अभ्यास आवश्यक है । अर्थग्रहण का यह अभ्यास दो प्रकार से किया जा सकता है –

- पूर्व पठित सामग्री द्वारा तथा
- अपठित सामग्री को आधार बनाकर

विद्यालयी स्तर पर अर्थग्रहण के मूल्यांकन के लिए पठित सामग्री प्रायः पाठ्यपुस्तक से संबंधित होती है। शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया के दौरान छात्र उस सामग्री के संपर्क में आ चुका होता है । इसके विपरीत अपठित सामग्री छात्र के पूर्व अनुभव का अंग नहीं होती है । अतः छात्र की अर्थ ग्रहण योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए यह माध्यम अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है ।

उद्देश्य:-

- विद्यार्थी में किसी भी मुद्रित सामग्री को ध्यान से पढ़ने तथा उसमें निहित अर्थ तथा भाव को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना ।
- सटीक उत्तर देने की योग्यता का विकास करना ।

शिक्षण सहायक सामग्री:-

- रोचक तथा साहित्यिक गद्यांश व पद्यांश
- मुद्रित सामग्री
- उदाहरण हेतु हल सहित आदर्श गद्यांश व पद्यांश
- कम्प्युटर पर पॉवर प्वॉइंट प्रस्तुति
- विज़ुअलाइज़र द्वारा प्रदर्शन

शिक्षण नीति

- चर्चा मिश्रित व्याख्यान
- निरुपण / प्रदर्शन
- समूह निर्माण
- विभिन्न समूहों में कार्य विभाजन
- समूह में विभक्त करके प्रत्येक समूह में एक-एक अपठित गद्यांश व पद्यांश का चयन तथा उस पर आधारित प्रश्नों का निर्माण करवाना ।
- विचार विमर्श के पश्चात एक समूह द्वारा प्रदर्शन तथा अन्य समूहों द्वारा उत्तर देते हुए सहभागिता।

मूल्यांकन

- सम्भावित उत्तरों की पहचान तथा प्रस्तुति ।

विद्यार्थियों हेतु निर्देश

- पूछे गए प्रश्नों में अंतर्निहित उद्देश्य को समझकर ही प्रश्नों के उत्तर खोजे जाएँ ।
- प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत सामग्री में निहित रहते हैं इसलिए गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए ।
- अपने उत्तरों को प्रस्तुत सामग्री तक ही सीमित रखना चाहिए । विषय से संबंधित पूर्वप्राप्त अन्य जानकारी के उल्लेख से बचना चाहिए, क्योंकि अर्थबोध परीक्षण का आधार प्रस्तुत सामग्री ही है ।
- उत्तर लिखते समय सरल,सुबोध,सहज भाषा का प्रयोगअपेक्षित है ।

सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी (प्रथम चरण)
17 से 28 मई 2017
व्याख्यान माला (सारांश)

सात अच्छी आदतों का विकास

श्री रणवीर सिंह
उपायुक्त एवं निदेशक
के वि सं शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान चंडीगढ़

श्री रणवीर सिंह- उपायुक्त शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान चंडीगढ़ ने महान लेखक स्टीफन आर. कॉवी की पुस्तक "Seven Habits of Highly Effective People" से शिक्षकों को स्वयं में उन सात सात अच्छी आदतों के विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया। सात आदतों में कार्य की जिम्मेदारी समझना, लक्ष्य निर्धारित करना, प्राथमिकता के आधार पर कार्य करना, स्वयं जीतें और दूसरों को भी जीतने दें, अपना ज्ञान बढ़ाकर दूसरों को ज्ञान दें, विश्वास बढाएँ अर्थात दृढ़ इच्छा शक्ति और कुल्हाड़ी की धार की तरह अपने को पैना करना शामिल हैं।

उन्होंने शिक्षकों को अपने शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए दो सुझाव दो शिकायतें विधि को अपनाने को कहा।इसके अतिरिक्त अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए अन्य विधियों पर भी चर्चा की यथा सहकारी, सहयोगी एवं सहकर्मी विधि। के वि सं शिक्षकों हेतु "आचार संहिता " विषय पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि दुराचार तीन प्रकार का होता है- सूक्ष्म, संगीन एवं अनैतिक। उन्हें करने पर किस प्रकार का दण्ड विधान है, इस पर विस्तार से चर्चा की। अंतत: उन्होंने महत्वपूर्ण धारा 81बी एवं 81 डी पर भी विस्तृत एवं महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की ।

शिक्षक होने पर गर्व महसूस करें

श्री एम. एस. चौहान
उपायुक्त के. वि. संगठन, चंडीगढ़ संभाग

श्री एम. एस. चौहान- उपायुक्त के. वि. संगठन, चंडीगढ़ संभाग ने प्रशिक्षण शिविर में आए हुए शिक्षकों को संबोधित करते हुए समाज व राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों के योगदान पर विस्तार से चर्चा की । उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिक्षक को अपने शिक्षक होने पर गर्व महसूस करना चाहिए क्योंकि शिक्षण व्यवसाय अपने आप में बहुत से उत्तरदायित्वों को समेटे हुए है। एक उत्तम शिक्षक को सेवानिवृत्ति के पश्चात भी अपनी सेवाओं से विद्यार्थियों और समाज को अपनी सेवाओं से लाभान्वित करवाते रहना चाहिए। उपायुक्त महोदय ने अपने व्याख्यान में बताया कि पाठ्यचर्या में कमी होने के कारण विद्यार्थियों का विकास सही ढंग से नहीं हो पा रहा है अत: शिक्षा के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए इसके संरचनात्मक रूप में बदलाव लाना आवश्यक है उन्होने श्रेष्ठ शिक्षक के लिए विद्यार्थियों से प्रेम करना और अपने विषय में दक्ष होना परम आवश्यक बताया।

विषय : सूचना का अधिकार अधिनियम 2005

श्रीमती इंदिरा मुद्गल
सहायक आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन,
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

दिनांक 22/05/17 को श्रीमती इंदिरा मुद्गल, सहायक आयुक्त द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम,2005 पर विस्तार से अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । इस सत्र में प्रतिभागियों को सूचना का अधिकार अधिनियम,2005 के भारत में अस्तित्व में आने के इतिहास की जानकारी देते हुए विश्व परिदृश्य के सन्दर्भ में भी इसे स्पष्ट किया । सूचना का अधिकार अधिनियम,2005 भारत में मजदूर किसान शक्ति संगठन जयपुर के 1994 से मानवाधिकारों के रक्षार्थ प्रारंभ आन्दोलन क्यों और कैसे एक अधिनियम का रूप ले सका इसकी जानकारी दी गई । उन्होंने बताया कि सूचना क्या है ? सूचना कौन दे सकता है और कौन ले सकता है ? जन सूचना अधिकारी के दायित्व क्या क्या हैं ? केंद्रीय सूचना आयोग व राज्य सूचना आयोग का संगठन, कार्य एवं क्षेत्राधिकार क्या क्या हैं ? विद्यालय स्तर पर जन सूचना अधिकारी कौन होता है एवं सूचना उपलब्ध कराने का समय कितने दिन होता है ? सूचना देने में विलम्ब होने पर क्या और कितनी पेनल्टी लग सकती है ? सूचना प्राप्त न होने पर कहाँ अपील की जा सकती है आदि अनेक व्यवहारिक प्रश्नों पर सत्र के दौरान श्रीमती इंदिरा मुद्गल, सहायक आयुक्त द्वारा प्रतिभागियों की जिज्ञासा का शमन करते हुए सार्थक चर्चा की ।

बैक टू बेसिक

सुश्री टी. रुक्मणि
सहायक आयुक्त चंडीगढ़ संभाग

चंडीगढ़ संभाग की सहायक आयुक्त सुश्री टी. रुक्मणि जी ने प्रशिक्षण शिविर के आठ संभागों से आए हुए हिंदी शिक्षकों को संबोधित करते हुए अपने व्याख्यान में केंद्रीय विद्यालयों में आधारभूत शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किसी भी भाषा के शिक्षण के लिए विद्यार्थियों को श्रवण, वाचन, पठन और लेखन का आना अत्यंत आवश्यक है जबकि आज के विद्यार्थी भाषा सीखते हुए इन कौशलों में दक्ष नहीं हो पाते और बुनियादी तौर पर विषय में कमजोर रह जाते हैं। " बैक टू बेसिक" उनकी इन्हीं बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की परिकल्पना पर आधारित है। यह मिनिमम लर्निंग की संकल्पना पर आधारित है। सहायक आयुक्त महोदया जी ने मौन पठन पर बल देते हुए कहा कि इससे विद्यार्थियों में ध्यान- केंद्रित करने की आदत का विकास होता है अत: कक्षा में इसका निरंतर अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

उन्होंने बैक टू बैसिक पर आधारित पाठ योजना निर्माण के प्रारूप को स्पष्ट करते हुए इसके विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

व्यक्तित्व विकास और संप्रेषण कौशल

डॉ . संध्या शर्मा
प्राचार्या सैक्टर -31 चंडीगढ़

सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविर की निदेशिका डॉ॰ संध्या शर्मा – प्राचार्या सैक्टर -31, चंडीगढ़ ने अपनी व्याख्यान मालाओं में बताया कि हम सभी प्रबुद्ध एवं परिपक्व हैं। मार्ग से भटके हुए युवावर्ग एवं

किशोरों में हमें संस्कार जाग्रत करने हैं। शिक्षकों को मनसा, वाचा, कर्मणा बिना किसी स्वार्थ के अपनी कर्मस्थली पर अडिग रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि प्रसन्नता, खुशहाली, सकारात्मकता और आत्मविश्वास के बल पर एक शिक्षक अपने व्यक्तित्व का विकास कर अपना प्रभाव विद्यार्थियों पर छोड़ने में सक्षम हो सकता है। एक व्यक्ति विशेष का व्यक्तित्व उसके दृष्टिकोण, शौक, सामाजिक प्रतिष्ठा भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ एवं सामाजिक भूमिकाओं में निहित होता है। यह सार्वजनिक बोलचाल, शारीरिक हाव- भाव, व्यवहार, क्रोध प्रबंधन, शारीरिक योग्यता मित्र बनाने के कौशल, परेशानियों से लड़ने की क्षमता आदि पर निर्भर करता है। इसमें समय प्रबंधन का भी बहुत महत्व होता है। निदेशिका जी ने विषय समीति की बैठक में विचार किये जाने वाले महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी प्रकाश डाला । उन्होंने बताया कि भाषा कौशलों को सीखने में जिन विद्यार्थियों को कठिनाई आती है, उनकी समस्या को पहचान उसमें सुधार के लिए हर संभव प्रयास किये जाएँ। प्राचार्या जी ने अभिव्यक्ति कौशल के लिए आवश्यक तत्वों को स्पष्ट करते हुए बताया कि प्रभावी बातचीत, बातचीत के दौरान आंखों से संपर्क बनाए रखना और भाषा की स्पष्टता का होना अत्यंत आवश्यक है।

बाल शोषण एवं किशोर वर्ग की समस्याएँ

श्रीमती शाम चावला प्राचार्य
के. वि हाई ग्राउंड्स

के. वि. हाई ग्राउंड्स की प्राचार्या श्रीमती श्याम चावला जी ने अपने व्याख्यान के अन्तर्गत किशोरों की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की । उन्होने बताया कि अध्यापकों को विद्यार्थियों की बातों को ध्यान से सुनना है, उसकी मनोवैज्ञानिकता को समझना है । इसके साथ ही उन्होने बच्चों को नियमित रूप से पौष्टिक आहार देने के महत्व पर चर्चा की । यदि छात्र के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आए तो उसके कारणों का पता लगाकर उन्हे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । इसी क्रम में उन्होने बाल श्रम तथा बाल शोषण विषय पर भी विस्तृत चर्चा की । विद्यार्थियों की मानसिक,शारीरिक,सामाजिक समस्याओं का निराकरण उन्हे बिना समझे नहीं किया जा सकता अतः एक शिक्षक एवं अभिभावक को बच्चों के साथ व्यवहार करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता है ।

कविता शिक्षण की विधियाँ

डॉ॰ कुसुम
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय
सैक्टर 20 चण्डीगढ़

डॉ॰ कुसुम जी ने सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान काव्य –शिक्षण विषय पर अपना उपयोगी व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने काव्य की परिभाषा को पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों के अनुसार स्पष्ट किया। काव्य की विशेषताओं पर दृष्टिपात करते हुए बताया कि काव्य के लिए अनुभूति की प्रबलता , रसानुभूति , आनंदानुभूति, काल्पनिकता का मानवीकरण, संगीतात्मकता, रागात्मकता एवं सत्यम, शिवम, सुंदरम की प्रतिस्थापना आवश्यक है।

काव्य को पढ़ाने के विभिन्न स्तरों पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि प्राथमिक स्तर पर कविता को सामूहिक गीत की तरह गाकर अभिनय के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर भावों को समझने की क्षमता विकसित कर यति, गति और लय से वाचन कर काव्य

प्रतियोगिताओं के लिए प्रेरित करना चाहिए। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को काव्य के सौंदर्य से अवगत कराना चाहिए। काव्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान करवाकर कल्पना शक्ति का विकास करना चाहिए। काव्य के तत्वों पर विचारोपरांत काव्य शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों एवं विधियों की जानकारी व काव्य के प्रकारों को स्पष्ट करते हुए उन्होने अपने व्याख्यान का समापन किया।

कहानी नाट्यरुपांतरण एवं मंचन

श्री चक्रेश कुमार-
पंजाब कला समिति

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पुरस्कार से सम्मानित श्री चक्रेश कुमार जी ने थियेटर किस प्रकार शिक्षण प्रक्रिया में सहायक सिद्ध हो सकता है- विषय पर प्रकाश डाला। श्री चक्रेश जी ने थियेटर के प्रकारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बाल रंगमंच और युवा रंगमंच द्वारा मानवीय अनुभूतियों को साकार रूप प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए अभिनय कौशल द्वारा उन्हें व्यक्तित्व विकास के अवसर दिए जा सकते हैं। नकारात्मक टिप्पणी से विद्यार्थियों में हीनभावना आ सकती है अत: एक अच्छे शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों को सकारात्मक एवं सुविधाजनक वातावरण उपलब्ध करवाए तथा उनका विश्वास जीते। विभिन्न क्रिया- कलापों के द्वारा उन्होंने बच्चों में आत्मविश्वास, संप्रेषणीयता व अभिव्यक्ति कौशल को निखारने के उपाय बताए। श्री चक्रेश जी ने बताया कि नाट्य मंचन संबंधी सिद्धांतों के अंतर्गत स्टेज को नौ भागों में बांटा जाता है इसके अतिरिक्त मंच प्रस्तुति के लिए आवश्यक तत्व- हाव- भाव, बोलते समय आवाज में उतार चढ़ाव का ध्यान रखना, मंच पर चलने व खड़े होने की सही मुद्रा पर भी बात की। नुक्कड़ नाटक का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात उन्होंने थियेटर को विद्यार्थी किस प्रकार कैरियर के तौर पर चुन सकते हैं- विषय पर चर्चा करते हुए अपना व्याख्यान समाप्त किया।

हिन्दी शिक्षण की विविध प्रविधियाँ

डॉ॰ संगीता पंत
डीन,कॉलेज ऑफ एडुकेशन
चितकारा विश्वविद्यालय

डॉ॰ संगीता पंत जी ने सर्वप्रथम निबंध के वर्तमान प्रारूप पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों को सामान्य विषयों के अतिरिक्त नए विषय पर निबंध लेखन करवाकर उनकी मनन शक्ति को विकसित किया जा सकता है। साथ ही इस तरह के निबंधों मे आंकड़ो का समावेश भी किया जा सकता है। वाचन के प्रकारों पर प्रकाश डालते हुए उन्होने बताया कि बच्चों को प्राथमिक स्तर पर सस्वर वाचन और माध्यमिक स्तर व उच्च- माध्यमिक स्तर पर मौन वाचन का अभ्यास करवाया जाना चाहिए । शिक्षण की विविध प्रविधियों- व्याख्यान विधि, शिक्षण द्वारा सीखना, समूह द्वारा सीखना, फ्लिपड विधि आदि के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए ब्लूम्स टैक्सोनामी पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि SWOT विधि का प्रयोग कक्षा में करवाकर विद्याथियों को स्वयं के बारे में चिंतन करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है। डॉ॰ संगीता जी ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए परियोजना आधारित शिक्षण व क्रियात्मक शोध द्वारा भी शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

किशोर शिक्षा कार्यक्रम (AEP)

श्री एस.पी. सिंह
सह प्रशिक्षक (जीव विज्ञान)

श्री एस.पी. सिंह, सह प्रशिक्षक (जीव विज्ञान) शिक्षा एवं आंचलिक प्रशिक्षण संस्थान चंडीगढ़ द्वारा किशोर शिक्षा कार्यक्रम विषय पर अपना संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित व्याख्यान प्रतिभागियों के साथ विविध गतिविधियों का आयोजन करते हुए प्रस्तुत किया । उन्होंने किशोरावस्था के पूर्व की अवस्थाओं से किशोरावस्था की आयु तक पहुँचने के विविध पड़ावों की चर्चा की। विद्यार्थियों को समझने के पूर्व शिक्षकों व अभिभावकों को अपने द्वारा भोगे और जी लिए गए किशोर जीवन के पहलुओं को ध्यान रखना होगा। सर्वप्रथम स्वयं को आयु के दौरान के शारीरिक,मानसिक,संवेगात्मक और आतंरिक परिवर्तनों पर अपनी समझ पूर्ण विकसित करनी होगी तब ही कहीं जाकर किशोरों की समस्याओं व चुनौतियों को पहचान सकेंगे, साथ ही साथ उनका उचित निराकरण करने में सकारात्मक भूमिका निभा सकेंगे । श्री सिंह द्वारा इस बात को और अधिक स्पष्ट करने हेतु गुब्बारे और पिन की सहायता लेकर एक गतिविधि का आयोजन किया जिसका उद्देश्य था किसी भी कार्य को करने से पूर्व ध्यान से सुनना व समझना चाहिए फिर उस पर निर्णय लेना चाहिए । एक और गतिविधि का आयोजन किया – अपनी ख़ुशी को बाँटिए और अपने साथियों को बताइए जिससे आपसी संबंध विश्वसनीय और मधुर बन सकें। इसके लिए श्री सिंह द्वारा स्माइली वितरित की और प्रतिभागियों ने उन्हें आपस में बांटा । इसी क्रम में उन्होंने एक किशोर शिक्षा से संबंधित एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जिसका विश्लेषण भी प्रश्न के उत्तर बताते हुए उन्होंने किया । पोक्सो एक्ट 2012 के बारे में भी संक्षिप्त में प्रतिभागियों को जानकारी दी गई । श्री एस पी सिंह ने अंत में सभी प्रतिभागियों से यह अपील की कि वे विद्यार्थियों से व्यवहार करते समय उनकी रुचियों, आदतों, समस्याओं और आयु के परिवर्तनों को ध्यान रखते हुए छात्रों का विश्वास जीतकर, उन्हें जीवन में सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर करने का प्रयास करना चाहिए

ग़ज़ल शिल्प और संरचना

डॉ. राजेश मोहन
राजकीय ब्रजेंद्रा महाविद्यालय
फरीदकोट

अतिथि वक्ता के रूप में डॉ.राजेश मोहन ने ग़ज़ल,गीत और नज़्म पर चर्चा की। उन्होंने ग़ज़ल की उत्पति एवं इतिहास पर प्रकाश डालते हुए भारत में ग़ज़ल के प्रारंभ और वर्त्तमान तक पहुँचने के सफ़र को सरल शब्दों में पेश किया । ग़ज़ल का सफ़र ईरानी लोकगीत चामा के रूप से विविध सूफी धर्मगुरुओं के माध्यम से भारत पहुँचा, जिसे अमीर खुसरो, वली, मीर, ग़ालिब, ज़फर, मोमिन, दाग, इक़बाल, फैज़, फिराख, साहिर, मजरूह, निदा फ़ाजली से लेकर आधुनिक शायर अनवरत चलाए हुए हैं । हिंदी में भी ग़ज़लों का ज़माना दुष्यंत कुमार की गजलो से माना जाता है । उन्होंने ग़ज़ल ओर नज़्म का अंतर बताते हुए शेर छंद के बारे में बताया कि एक पंक्ति को मिसरा कहा जाता है दो पंक्तियों को शेर कहा जाता है। ग़ज़ल की शब्दावली मतला,मकता,काफ़िया व रदीफ़ की विस्तृत जानकारी प्रतिभागियों को दी। इस अवसर पर उन्होंने स्वरचित ग़ज़ल का पाठ कर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। साथ ही सभी की जिज्ञासाओं को भी समुचित उत्तर देते हुए शांत किया ।

सेवा पुस्तिका

सुश्री रचना
सहायक अनुभाग अधिकारी
के.वि.एस.,क्षेत्रीय कार्यालय
चंडीगढ़ संभाग

के.वि.एस.चंडीगढ़ संभाग की सहायक अनुभाग अधिकारी सुश्री रचना जी ने अपने व्याख्यान के अन्तर्गत "सेवा- पुस्तिका" के बारे में विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने बताया कि हर कर्मचारी को सेविका पुस्तिका का वर्ष में एक बार अवश्य निरीक्षण करना चाहिए। कर्मचारी को अपना नाम,पता,परिवार के सदस्यों के नाम ,पिता का नाम ,शादी के बाद पति अथवा पत्नी का नाम ,मनोनीत सदस्य,सेवा सत्यापन आदि की सही प्रविष्टि होनी अति आवश्यक है तदोपरान्त विभिन्न अवकाश यथा अर्जित अवकाश ,अर्ध वैतनिक अवकाश ,अवैतनिक अवकाश ,मातृत्व अवकाश,पितृत्व अवकाश आदि पर विस्तार से चर्चा की गई । सबसे महत्वपूर्ण जानकारी के अन्तर्गत यह बताया गया कि आपातकाल स्थिति में ग्रीष्मावकाश या शीतावकाश के दौरान नजदीक के किसी भी केंद्रीय विद्यालय विद्यालय अथवा क्षेत्रीय कार्यालय में रिपोर्ट करें।

अवकाश नियम

श्री एल.एल.सिंगला-
सहायक अनुभाग अधिकारी
के वि सै 31 चंडीगढ़

श्री एन.एल. सिंगला जी ने सभी प्रतिभागियों को केंद्रीय विद्यालय संगठन के कर्मचारियों हेतु अवकाश संबंधी नियमों की विस्तार से जानकारी देते हुए सर्वप्रथम यह स्पष्ट किया कि कर्मचरियों को मिलने वाला किसी भी प्रकार का अवकाश उनका अधिकार नहीं, बल्कि उनको विभाग की ओर से मिलने वाली एक प्रकार की विशेष सुविधा है।के. वि. संगठन की ओर से मिलने वाले आकस्मिक, अर्द्धवैतनिक, क्म्युटिड एवं अर्जित अवकाश के साथ- साथ मातृत्व और पितृत्व आदि अलग- अलग प्रकृति के अवकाश की विस्तार से व्याख्या की। साथ ही साथ प्रतिभागियों के हर तरह के प्रश्नों के जवाब देते हुए उनका सरल व सहज तरीके से स्पष्टीकरण किया। ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन अवकाश एवं शरद व शीतकालीन अल्पावधि अवकाश में अंतर स्पष्ट किया कि इन अवकाशों के साथ किस प्रकृति का तथा किन शर्तों के साथ अवकाश लिया जा सकता है।

एल. टी. सी. नियमों पर प्रतिभागियों को चर्चा में शामिल करते हुए उनकी शंकाओं के आधार पर सूक्ष्म जानकारी दी। उनका यह संबोधन सभी प्रतिभागी शिक्षकों के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुआ।

(संकलन द्वारा सुश्री मीनू बाला एवं श्रीमती कंचन)

आनंद की पाठशाला

राजीव कुमार स्वामी
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी
केंद्रीय विद्यालय चूरू

विद्यालय केवल ज्ञान और विद्या का ही केंद्र नहीं होता वह आनंद का भी अजस्र स्रोत होता है। टन- टन की घंटी के मधुर स्वर के साथ शुरु होने वाली विद्यालयी गतिविधियों में असीम आनंद भरा होता है। खुद यह टन-टन भी तो कितनी आह्लादकारी है। तन- मन को संगीत से भर देने वाला कितना मादक है , विद्यालय की इस ध्वनि का स्वर। सिर्फ एक घंटी का स्वर कितने- कितने कदमों को अनायास ही प्रार्थना स्थल की ओर मोड़ देता है। जीवन में अनुशासन का पहला पाठ विद्यालय ही पढ़ाता है। एक नन्हा बच्चा मां की गोदी से उतरकर जब अध्यापक की उंगली थामता है, वह पल अद्भुत आनंदकारी होता है। यह समर्पण मामूली नहीं है। और यहीं से शुरु होता है जीवन में आनंद का एक नया अध्याय।

प्रार्थना की मधुर स्वर लहरी का गूंजता समवेत स्वर हो , खेल के मैदान पर हिरणों की तरह उछल- कूद करते बच्चे हों या फिर कक्षा में आज्ञाकारी बनकर , मुग्ध होकर अध्यापक को सुनते मासूम चेहरे , सभी कुछ अनंत आनंदकारी, जीवन को ताज़गी और स्फूर्ति से भर देने वाला हो ता है। इन्हीं सब के बीच निरंतर चलने वाली मासूम शरारतों और बहानेबाजी में भी अद्भुत आनंद भरा होता है।

खेलने और मस्ती करने की अपनी सवाभाविक इच्छा के कारण जब कोई विद्यार्थी अपना जरूरी काम पूरा नहीं कर पाता है तो उसके मासूम और कच्चे बहाने सुनकर एक सच्चा शिक्ष क पुलकित हुए बिना नहीं रह सकता। अपने विद्यार्थियों की एक- एक शरारत को पहचानने का अभ्यास शिक्षक को बड़ा बनाता है और विद्यार्थी की किसी शरारत पर वह जिस प्यार और आत्मीयता से उसका कान पकड़ता है , आहा! क्या ही आनंदकारी दृश्य होता है वह । ठीक यही वह मंजर है जहां म स्तमोला कबीर अपना अनुभव गाते सुनाई पड़ते हैं।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढे खोट
भीतर हाथ संभार दे, बाहर बाहे चोट॥

असली आनंद तो इस बात में है कि विद्यार्थी का कान पकड़े हुए शिक्षक यह भूल जाता है कि जिस बच्चे को वह संवार रहा है , उससे उसका कोई सीधा हित नहीं जुड़ा है। परंतु ऐसी छोटी बात एक सच्चा शिक्षक भला कब सोचता है ? अपने विद्यार्थी का हित ही उसका हित है , यही उसका आनंद भी। विद्यार्थी का यही हित चिंतन तो शिक्षक को बड़ा और श्रेष्ठ बनाता है। विद्यार्थी के हित चिंतन का यह भाव इतना महान और शाश्वत है कि शिक्षक का पूरा जीवन इसके इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

सचमुच कैसा-कैसा आनंद भरा है विद्यालय में। पढ़ने-पढ़ाने के आनंद से लेकर बच्चों के मासूम चेहरों को निहारने और उनकी भोली- सच्ची बातों को सुनने का जो अवसर शिक्षक को मिलता है , दुनिया में शायद ही किसी को मिलता हो। बच्चों के बीच रहकर आजीवन बच्चा बने रहने का सौभाग्य शिक्षक के सिवा भला और किसे मिला है? सचमुच आनंद की कितनी अद्भुत प्रयोगशाला है विद्यालय जहां पांच से पचपन के बीच का यह संवाद कभी खत्म नहीं होता।

विद्यालय के इस आनंद के अनगिनत रूप हैं। इस रोमांचकारी आ नंद को महसूस करना हो तो आधी छुट्टी के समय किसी कक्षा में घुस जाइए। बच्चों के टिफिन में महकते अचार की खुशबू आपका रोम- रोम ना खिला दे तो कहिए। बांटकर खाने और साथ खाने का जो आनंद विद्यालय में मिलता है वह जीवन में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। पढ़ते- खेलते थक चुके बच्चों को मिलजुलकर खाते देखना सचमुच एक सुहाना मंजर है जो फिज़ा में स्वाद और खुशबू भर देता है।

उस अध्यापक के आनंद का पारावार कौन समझ सकता है जिसके विद्यार्थी जीवन में सफल होते हैं और लौटकर पांव छूकर आशीर्वाद लेते हैं। किसी बड़ी सफलता के साथ लौटे अपने विद्या र्थी को देखकर अध्यापक का रोम-रोम पुलकित हो उठता है और उसके बचपन की कितनी ही स्मृतियां एकदम से ताज़ा हो जाती हैं। विद्यार्थी और अध्यापक का यह संबंध चिर-स्थायी और शाश्वत है।

एक सच्चा अध्यापक अपने विद्यार्थियों के लिए सदैव आनंद का स्रोत होता है। वह कक्षा- कक्ष में ही नहीं विद्यार्थियों के घर तक उनके साथ रहता है। डर बनकर नहीं बल्कि रात को सोने से पहले दोहराए जाने वाले पाठ में शामिल होकर। एक अच्छा अध्यापक सदैव पढ़ता और सीखता रहता है और अपने विचारों को परिवर्धित करता रहता है। वह अपनी कक्षा का अंतिम विद्यार्थी होता है क्योंकि उसकी चुनौती उन बच्चों से है जो सीखने में औरों से जरा मंद हैं। फिर भी उसका आनंद अनंत है।

किसी ढीठ और अपवाद स्वरूप विद्यार्थी की धृष्टता भी एक सच्चे शिक्षक को आनंद ही देती है। वह उसकी उद्दंडता से विचलित नहीं होता बल्कि इसे उसकी नासमझी मानकर उसमें सुधार का आनंददायी रास्ता अपनाता है। अगर वह इसमें सफल हो जाता है तो उसके आनंद की सीमा नहीं रहती। अपने इस प्रयास में यदि वह असफल भी होता है तब भी उसके प्रयास अनवरत जारी रहते हैं और यही उसके आनंद का कारण है।

अध्यापक और विद्यार्थी का यह संबं ध सचमुच आह्लादकारी होता है और इसका माध्यम बनता है विद्यालय। विद्यालय के कौने- कौने में आनंद बिखरा पड़ा है। वह देखो चपरासी आ रहा है , छुट्टी की अंतिम घंटी बजाने। कैसा देवदूत सा लग रहा है इस वक्त यह चपरासी। इस वक्त बच्चों के आनंद को मापने का कोई यंत्र होता तो उसकी सुइयां निश्चय ही उसे तोड़कर बाहर आ गई होतीं। छुट्टी की एक घंटी और आनंद जैसे बांध तोड़कर बह उठेगा। परंतु विद्यार्थियों को सिर्फ छुट्टी ही प्यारी है , ऐसा नहीं है। कल सुबह इसी चपरासी की घंटी पर एक बार फिर खुलेगी आनंद की यह पाठशाला और एक बार फिर दौड़ते हुए आ एंगे यही सब विद्यार्थी आनंद की छोटी-बड़ी पोटली बनकर। सचमुच-

जितनी बुरी कही जाती है, उतनी बुरी नहीं है दुनिया
बच्चों के स्कूल में शायद तुमसे मिली नहीं है दुनिया।

पाठ योजना

एच आर शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी
के वि जाखू शिम ला

विषय हिंदी (आधार) पाठ जूझ कक्षा :- बारहवीं

1.<u>प्रकरण की प्रस्तावना</u> :-

निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएँगे तथा विद्यार्थी उनके संभावित उत्तर देगें---

क) क्या अपने वरदराज का नाम सुना है ?

कुछ जी हाँ / कुछ जी नही भी ।

ख) उनके बारे में और क्या सुना है ?

विद्यार्थी जीवन में बहुत पिछड़े/ मंदबुद्धि मूढ़मति छात्र के रूप में प्रसिद्ध/लेकिन बाद में मेहनत का पाठ सीखकर बहुत बड़ा विद्वान् बना। प्रसंगानुसार शिक्षक अपेक्षित भूमिका बनाएगा।

ग) मंदबुद्धि वरदराज कैसे विद्वान् बना ?

परिश्रम के बल पर अथवा सभी बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य होते हुए भी कुछ बच्चे क्यों नहीं पढ़ पाते? (विद्यार्थी अलग-अलग कारण बताएँगे)

2. <u>प्रकरण की प्रासंगिकता</u> :- आज जो पाठ पढ़ने जा रहे है, उसमे भी एक ऐसे ही एक किशोर बालक/ विद्यार्थी की कठिन मेहनत एवं 'संघर्ष-शीलता' की जीवंत गाथा है,जो हर परिस्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य,संगीत एवं अन्य विषयों की ओर आगे बढ़ने के लिए अत्यंत आकुल है,बेचैन है ।

निश्चय ही आप जैसे किशोर होते विद्यार्थियों के लिए/ या अपने काम से जी चुराने वाले / निराश एवं पथ भ्रष्ट किशोरों के लिए यह कथा हम कदम बन सकती है ।

3. <u>सामान्य उद्देश्य</u> :-

- गद्य साहित्य (कला साहित्य) में अभिव्यक्त जीवन–दृष्टि एवं जीवन मूल्यों को समझने की विवेक-बुद्धि व क्षमता उत्पन्न करना ।
- छात्रों की मौलिक कल्पना शक्ति को विकसित कर उन्हें सृजनात्मक क्षमता से परिपूर्ण करना ।
- विद्यार्थियों में लिखित मौखिक अभिवयक्ति क्षमता का विकास करना ।

4. <u>विशिष्ट उद्देश्य</u> :-

मराठी साहित्य के साहित्यकार डा. आनंद यादव के किशोरावस्था में देखे एवं भोगे गंवई जीवन के खुरदरे यथार्थ एवं उसके रंगारंग परिवेश की 'प्रेरक' एवं जीवंत गाथा प्रस्तुत करके किशोर होते विद्यार्थियों को मेहनती, संघर्षशील एवं विवेकशील बनने की प्रेरणा देना है।

5. <u>विषयोपस्थापन</u> :-शिक्षक द्वारा स्वयं गद्या पाठ की शुरुआत करके तदन्तर विद्यार्थियों से (अलग-अलग अन्वितियों में पाठ को विभाजित कर) कथा का पाठ (आदर्शवाचन) करवाया जाएगा ।

6. <u>काठिन्य-निवारण</u> :-

कठिन शब्दों के अर्थ कथावाचन के साथ-साथ ही विद्यार्थियों की सहभागिता से स्पष्ट किए जायेंगे । यथा – कंडे,बरहेला,जीमना,खीसा,अपनापा आदि।मुहावरों आदि का स्पष्टीकरण।यथा –"हज़ामत बनाना"।

7. <u>विशिष्ट अंशों का स्पष्टीकरण</u> :-

वैसे तो पाठ /कथा की शब्दावली सरल एवं बोलचाल की है,तथापि ग्रामीण (मराठी)शब्दावली के कुछ प्रयोग पर आधारित बोधप्रश्न बीच-बीच में पूछकर पाठ की रोचकता बनाए रखी जाएगी । कक्षा परीक्षा का भी यथावसर सहारा लिया जा सकता है । (लिखित रूप में दो-चार प्रश्न देकर)

8. <u>अतिरिक्त ज्ञान का संप्रेषण</u> :-

(क) लेखक (उपन्यासकार)के जीवन एवं कृतित्व की जानकारी (अनुवादक के बारे में भी)। (ख)जीवन में परिश्रम के महत्त्व,परिस्थितियों जूझने एवं संघर्षशील बनने , विवेक से काम करने के महत्त्व को उजागर करना तथा विद्यार्थियों में हिम्मत, साहस, धैर्य, आत्मविश्वास,आत्मबल / मनोबल जैसे मानवीय गुणों एवं जीवनमूल्यों के विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण कथनों / सूक्तियों / सद्विचारों का सहारा लेना तथा अन्य कथाओं का उल्लेख भी अतिरिक्त ज्ञान में सम्मिलित होगा। छात्रों के अर्जित ज्ञान का भी इसके लिए उपयोग किया जा सकता है ।

9. अतिरिक्त जानकारी :-

1. परिश्रमशीलता / संघर्षशीलता / जुझारू प्रवृति मुक्त व्यक्तित्व/ प्रेमकथाएं
2. जीवनपोषक मानवीय मूल्यों पर आधारित कथन/ सूक्तियाँ / सद्विचार सम्बन्धी शिक्षक का निजी अध्ययन एवं पठित साहित्य ।

10. शिक्षण-व्यूह-रचना :-

1. प्रस्तुत प्रकरण में निहित विचारों,भावनाओं एवं संकेतिक संदेशों को प्रश्नोत्तर-विधि का/ व्याख्यान विधि के माध्यम से उजगार करना ।

2. सहायक सामग्री के रूप में श्यामपट का/ सूक्तियों व सद्विचारों/ काव्य पंक्तियों का सहारा लिया जाएगा। सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण सामग्री 'शिक्षक' की निजी शिक्षण कला ही होगी ।

11. छात्रों की सहभागिता की योजना:-

विद्यार्थियों को भी यदि परिश्रम की महत्ता, साहस, धैर्य, आत्मविश्वास आदि से सम्बन्धित कोई सूक्ति आदि याद हो (किसी भी भाषा में) तो ऐसे विद्यार्थियों की सहभागिता से पाठ को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाएगा ।

12. प्रकरण - बोध की जाँच का मूल्यांकन :- (प्रश्नों के माध्यम से विशेषकर पढ़ाई में कमजोर / छात्रों से)

निम्नलिखित बिंदुओं को केंद्र में रखकर बोध प्रश्न किए जाएँगे-

(क) शब्द बोध (ख़) भाव बोध (ग) सौंदर्य-बोध (घ) विषय- बोध

यथा :-

1) कंडे थापने से क्या अभिप्राय है
2) लेखक की माँ एवं 'दारा' (पिता) के स्वभाव में क्या अंतर है?
3) पिता को मनाने के लिए लेखक जो मुक्ति / उपाय अपनाता है,इससे उसकी कौन–सी चारीत्रिक विशेषता उजागर होती है ?
4) पाँचवीं कक्षा की तैयारी लेखक कितने महीने में कर लेने का विश्वास दिलाते हैं?

13. मूल्यांकन के समय आने वाली कठिनाइयों का निराकरण :- (यह भी विद्यार्थियों की सहभागिता से ही प्रश्नोत्तर विधि से किया जाएगा)

14. गृह-कार्य :-

1.जूझ शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शिक्षक कथानायक की किसी केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करती है ?

2.दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए यदि झूठ का सहारा माँ तथा बेटे द्वारा नहीं लिया जाता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता है ? अनुमान लगाएँ।

15. प्रकरण पर आधारित लघु परियोजना कार्य :-

पठित पाठ की विषयवस्तु पर आधारित ऐसे 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली तैयार करें, जिनके उत्तर एक शब्द/ वाक्य/ या वाक्यांश में दिए जा सकें । (बहुविकल्पी प्रश्न भी हो सकतें हैं) ।

16. प्रकरण में वर्णित विषयानुसार जीवन-कौशल-संबंधी कार्य /प्रश्न / कार्य :-

1.'मन के हारे हार है ,मन के जीते जीत' –विषय पर लगभग 3 मिनट में कक्षा में अपने ओजस्वी विचार प्रकट करें ।

2. अपने आस –पड़ोस में ऐसे बच्चे की खोज कीजिए ,जो पढ़ने की लालसा रखने के बावजूद भी पढ़ाई ना कर पाया हो । उसकी पढ़ाई जारी रखने में आप अपना अपेक्षित योगदान देकर अपना सामाजिक दायित्व का निर्वहण करें ।

प्रश्न :-

1 यदि लेखक के स्थान पर आप होते तो आप पिता को मनाने के लिए क्या युक्ति अपनाते?
2 समान सुविधाएँ और समान परिवेश के बावजूद भी मानविकी वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में गुणात्मक परिणाम क्यों नहीं दिए जाते?अपने अनुभव से लिखें ।
3 'मंत्री' नामक मास्टर के व्यक्तित्व को सामने रखते हुए बताइए की आदर्श शिक्षक के गुण क्या हैं ?

Annexure - 1

पाठ योजना -शिक्षक दैनंदिनी योजना प्रारूप

Lesson Plan -Teachers Diary/ [A] Planning Format/

कक्षा /**Class/Section-12** वीं विषय/**Subject-**हिन्दी पाठ/**Chapter** -लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप कालांश संख्या/**No. of periods-**

प्रारम्भ करने की दिनांक /**Date of Commencement-** पूर्ण करने की अपेक्षित दिनांक /**Expected date of completion-**

पूर्ण करने की वास्तविक दिनांक/**Actual date of Completion-**

Gist Of The lesson Focused skills/Competencies	Targeted learning outcomes (TLO)	Teaching learning activities planned for achieving the TLO using suitable resources and classroom management strategies	ASSESSMENT STRATEGIES PLANNED
लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप--कवि गोस्वामी तुलसीदास	दोहे एवं चौपाई का सस्वर गायन करना ।	काव्यांश संबंधी वीडियो दिखाना ।	विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन करवाना ।
तव प्रताप ..... मनतेउँ नहिं ओहू । । रामचरित मानस से गृहीत लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने का प्रसंग है । हनुमान जी भरत जी का प्रताप हृदय में रखकर उनकी सराहना करते हुए संजीवनी बूटी लेकर लंका जाते है । वहाँ लंका में लक्ष्मण को निहारते हुए राम विलाप करते हुए कह रहे हैं कि तुम मुझे दुखी नहीं देख पाते थे , तुमने मेरे लिए बहुत से कष्ट सहे । तुम मेरी व्याकुलता पूर्ण बातें सुनकर उठते क्यों नहीं ।	वर्तनी की शुद्धता सहित सही-सही लिखने की योग्यता का विकास । पारीवारिक संबंधों का महत्व बताना ।	कक्षा में दोहे एवं चौपाई का आदर्श वाचन करना एवं कतिपय विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन करवाना । पारीवारिक संबंधों से जोड़ना	बोध-संबंधी प्रश्न । 1 हनुमान ने भरत को क्या आश्वासन दिया ? 2 हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए? 3 लक्ष्मण ने राम के लिए कौन-कौन से कष्ट सहन किए? 4 रात अधिक होते देख राम ने क्या किया? 5 'सो अनुराग' कहकर राम कैसे अनुराग की दुर्लभता की ओर संकेत कर रहे हैं?
पठन एवं गायन कौशल	सीखे हुए ज्ञान को परिवेश से जोड़ सकने की जागरूकता ।	दोहा चौपाई गायन	विद्यार्थियों के चार समूह बनाकर दोहे एवं चौपाई के गायन की प्रतियोगिता करवाना ।
श्रवण कौशल लेखन कौशल	दोहे एवं चौपाई का अवबोधन ।	पदों का सार समझाकर उनका भावार्थ सरलता से स्पष्ट करते हुए पाठ का विस्तार करना ।शब्दों का उच्चारण करते हुए उन्हें श्यामपट्ट पर लिखकर दर्शाना ।	• शब्दों का उच्चारण करना एवं विद्यार्थियों से लिखवाना । • इस प्रसंग को अपने परिवार से जोड़कर समझाइए ।

सुरेश कुमार पाटीदार, स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी

नाट्यरुपांतरण

कहानी - जामुन का पेड़ कृश्नचंदर

हास्य व्यंग्य रचना

मुख्य पात्र : पेड़ के नीचे दबा हुआ एक आदमी

गौण पात्र : माली, चपरासी, बाबूलोग, अफसर, साहित्य सेक्रेटरी, डाक्टर, तमाशा देखने वाली भीड़ आदि।

[प्रथम दृश्य]

(रात को तेज आंधी की वजह से से सेक्रेटेरियेट के लान में एक जामुन का पेड़ गिरा हुआ है जिसके नीचे एक अनजान आदमी दबा पड़ा है जिसे सर्वप्रथम एक माली देखता है। माली दौड़कर चपरासी को, क्लर्क को व सुपरिटेंडेंट को बताता है और फिर जल्दी ही भीड़ इकट्ठी हो जाती है।)

क्लर्क : बेचारा जामुन का पेड़ ! कितना फलदार था।"

दूसरा क्लर्क : इसकी जामुनें बड़ी रसीली थीं, मेरे बच्चे बड़े चाव से खाते थे(रूआँसा भाव)

माली : मगर यह आदमी?

चपरासी : पता नहीं जिंदा है या मर गया?

दूसरा चपरासी : मर गया होगा, इतने भारी पेड़ के नीचे दबा आदमी नहीं बच सकता

दबा आदमी : (कराहते हुए) : नहीं मैं जिंदा हूँ।"

क्लर्क : (ताज्जुब के साथ) जिंदा है !

माली : पेड़ हटाकर इसे जल्दी ही बाहर निकालना चाहिए।

एक मोटा चपरासी ☹ आलसी भाव से) बहुत मुश्किल काम है, तना बहुत वजनी है।

माली : अगर सुप्रिटेंडंट हुक्म दें तो सब मिलकर इस दबे हुए आदमी को निकाल सकते हैं।

(सभी मिलकर पेड़ उठाने को तत्पर हो जाते हैं)

सुप्रिटेंडंट : (आदेश भाव से) ठहरो ! मैं अंडर – सेक्रेटरी से पूछ लूँ।

(सुप्रिटेंडेंट अंडर सेक्रेटरी के पास गया- डिप्टी सेक्रेटरी- ज्वाइंट सेक्रेटरी- चीफ सेक्रेटरी)

(चीफ सेक्रेटरी ने ज्वाइंट सेक्रेटरीसे कुछ कहा डिप्टी सेक्रेटरी ने अंडर सेक्रेटरी से कुछ कहा, अंडर सेक्रेटरी ने सुप्रिटेंडेंट से कुछ कहा।)

सुप्रिटेंडेंट : (फाइल हाथ में लिए दौड़ा हुआ आता है) हम लोग खुद इस पेड़ को नहीं हटाएँगे क्योंकि हम लोग व्यापार विभाग से हैं और यह पेड़ कृषि विभाग के अधीन है अत: मैं फाइल को अर्जेंट मार्क करके कृषि विभाग को भेज रहा हूँ। वहाँ से आदेश आते ही इस पेड़ को हटा लिया जाएगा।

(दूसरा दिन- नया दृश्य)

(कृषि विभाग के अधिकारी फाइल पर कुछ टिप्पणी लिखकर व्यापार विभाग को – टिप्पणी के साथ हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट को – अंत में एग्रीकल्चर विभाग पर जिम्मेदारी डालते हैं)

(रात हो जाती है, कोई कानून हाथ में न ले ले अत: पुलिस का भी पहरा है, पुलिस की इजाजत से माली दबे हुए आदमी को खाना खिलाने का प्रयास करता है)

माली : (दबे आदमी से) तुम्हारी फाइल चल रही है, उम्मीद है कल तक फैसला हो जाएगा।

दबा आदमी : (चुप रहता है}

माली : (पेड़ के तने को देखते हुए) अच्छा हुआ कि तना तुम्हारे कूल्हे पर गिरा , अगर कमर पर गिरता तो रीढ़ की हड्डी टूट जाती

दबा आदमी : (चुप ही रहता है)

माली : तुम्हारा कोई वारिस है तो उसका अता पता बताओ, मैं उन्हें खबर करने की कोशिश करूंगा।

दबा आदमी : (बहुत मुश्किल से) मैं लावारिस हूँ।

(माली खेद प्रकट करते हुए दूर हट जाता है)

तीसरा दिन

अगला दृश्य- (भीड़ इकट्ठी है)

(हार्टीकल्चर सेक्रेटरी का जवाब पढ़ा जाएगा – आश्चर्य है इस समय जब हम पेड़ लगाओ मुहिम को ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं तब कुछ सरकारी अफसर मौजूदा पेड़ों को काटने का सुझाव दे रहे हैं। हम इसकी इजाजत नहीं दे सकते।)

एक मनचला : अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता, तो इस आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए।"

दूसरा आदमी : (इशारा करते हुए) अगर इस आदमी को ठीक बीच में से यानि धड़ से काटा जाए तो आधा इधर से व आधा उधर से निकाल लिया जाएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।

दबा आदमी : (आपत्ति के साथ) मगर इस तरह तो मैं मर जाऊँगा।

एक क्लर्क : यह भी ठीक कहता है।

मनचला आदमी : (क्लर्क का विरोध करते हुए) आप जानते नहीं हैं, आजकल प्लास्टिक सर्जरी बहुत उन्नति कर चुकी है और इस आदमी को धड़ के स्थान से फिर से जोड़ा जा सकता है।

(भीड़ धीरे-धीरे हट जाती है।फाइल मेडिकल विभाग को भेज दी जाती है। वहाँ से एक प्लास्टिक सर्जन आकर दबे आदमी के स्वास्थ्य, नाड़ी व फेंफडों की जाँच करता है।

प्लास्टिक सर्जन : इस आदमी की प्लास्टिक सर्जरी हो जाएगी और आप्रेशन भी सफल होगा लेकिन यह आदमी मर जाएगा।

(भीड़ पुन: छँट जाएगी, रात हो जाएगी)

माली : (दबे आदमी के मुँह खिचड़ी डालते) आपका मामला ऊपर चला गया है। कल सभी सचिवों की मीटिंग है। उम्मीद है आपके केस पर कल कोई फैसला हो जाएगा।

दबा आदमी : (आह भरते हुए शेर पढेगा) "ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक ! "

माली : (चकित भाव से मुँह में अंगुली दबाते हुए) क्या तुम शायर हो?

दबा आदमी : (चुपचाप हाँ में सिर हिला देता है)

चौथा दिन – (अगला दृश्य)

(माली- चपरासी- क्लर्क- हैड क्लर्क- सेक्रेटरी को बताते हैं और पूरे शहर में अफवाह फैल जाती है कि दबा आदमी शायर है। शहर के लोगों की भीड़ उसके चारों ओर जमा हो जाती है लोग उसे कविता और दोहे सुनाने लगते हैं, इसकी होड़ मच जाती है)

(फाइल भी दौड़ती रहती है तथा साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी दबे हुए आदमी का इंटरव्यू लेने लगता है)

साहित्य सचिव : (दबे आदमी से) क्या तुम कवि हो?

दबा आदमी : जी हाँ

साहित्य सचिव : किस उपनाम से शोभित हो?

दबा आदमी : ओस"

सा. सचिव : (लगभग चीखते हुए) " ओस ?' क्या तुम वही ओस हो, जिसका गद्य- संग्रह ओस के फूल अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है?

दबा आदमी : (हाँ में सिर हिलाता है)

सा. सचिव : (आश्चर्य से) " इतना बड़ा कवि,ओस के फूल का लेखक हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है उफ!कैसी भूल हो गयी हमसे, कितना बड़ा कवि और कैसी अंधेरी गुमनामी में दबा पड़ा है।"

दबा आदमी: (कराहते हुए) गुमनामी में नहीं, एक पेड़ के नीचे दबा हूँ, कृपया मुझे इस पेड़ के नीचे निकालिए।
सा. सचिव: (तत्परता से फाइल पर कुछ लिखते हुए) अभी बंदोबस्त करता हूँ।
(भीड़ छँट जाती है)
पाँचवा दिन- (नया दृश्य)
(साहित्य सचिव दौड़ा- दौड़ा आता है तथा खुशी के भाव से दबे आदमी को सम्बोधित करते हुए)
साहित्य सचिव : मुबारक हो ! मिठाई खिलाओ, हमारी साहित्य अकादमी ने तुम्हें अपनी केंद्रीय शाखा का मेंबर चुन लिया है। यह लो चुनाव पत्र। (कागज़ दिखाता है)
दबा आदमी : (दुखी स्वर में) मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से निकालो ।
साहित्य सचिव: हमने वह कर दिया जो हम कर सकते थे । यह हम नहीं कर सकते । बल्कि अगर तुम दरख्वास्त दे सकते हो तो तुम्हारे मरने के बाद हम यहाँ तक कर सकते हैं कि तुम्हारी बीवी को वजीफ़ा दे सकते हैं ।
दबा आदमी : मुझे जिंदा रखो । मैं अभी तक जीवित हूँ । (रुक – रुक कर,घोर पीड़ा के साथ)
साहित्य सचिव : (हाथ मलते हुए) मुसीबत यह है कि हमारा विभाग सिर्फ़ कल्चर से संबंधित है । पेड़ काटने का संबंध कलम दवात से नहीं आरी कुल्हाड़ी से है । उसके लिए हमने फारेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेंट लिखा है ।
(सन्नाटा छा जाता ह ,शाम हो जाती है , साहित्य सचिव खेद जताते हुए चला जाता है।)
माली (दबे हुए आदमी से) : कल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आकर इस पेड़ को काट देंगे और तुम्हारी जान बच जाएगी । माली खुशी से चला जाता है ।

छठा दिन (नया दृश्य)

फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के लोग आरी कुल्हाड़ी के साथ पेड़ काटने पहुँचते हैं लेकिन उन्हें विदेश मंत्रालय के अधिकारी यह कह कर रोक देते हैं कि यह पेड़ पिटोनिया देश के प्रधानमंत्री ने लगाया था अतः इसे काटने से उस देश के साथ हमारे संबंध खराब हो सकते हैं ।
एक क्लर्क (चिल्लाते हुए) : मगर एक आदमी की ज़िंदगी का सवाल है ।
दूसरा कलर्क : (समझाते हुए) लेकिन यह दो राज्यों के संबंधों का भी सवाल है । यह भी तो समझो कि पिटोनिया सरकार हमारे देश को कितनी सहायता देती है । उनकी मित्रता की खातिर क्या एक आदमी का बलिदान नहीं दे सकते ?
पहला कलर्क (आश्चर्य से) : तो क्या कवि को मर जाना चाहिए ?
दूसरा कलर्क : निस्संदेह
अंडर सेक्रेटरी (सुपरिटेंडेंट से) : आज सवेरे प्रधानमंत्री जी विदेश दौरे से वापस आ गए हैं । चार बजे विदेश विभाग इस फाइल को उनके सामने पेश करेगा । जो फैसला वो लेंगे वही सबको स्वीकार होगा ।
शाम हो जाती है । सुपरिटेंडेंट कवि की फाइल लेकर दौड़ता हुआ आता है । फाइल को हाथ में हिलाते हुए दबे आदमी से खुशी से चिल्लाते हुए : सुनते हो प्रधानमंत्री ने इस पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया है और इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है । आज तुम्हारी फाइल पूरी हो गई है । कल यह पेड़ काट दिया जाएगा और तुम्हें इस संकट से छुटकारा मिल जाएगा ।
लेकिन फैसला आने तक लोगों ने देखा कि:
दबे हुए आदमी के मुँह में चींटियाँ जा रही हैं , उसका मुँह खुला हुआ है , पुतलियाँ निर्जीव हो फट गई हैं , उसके जीवन की फाइल पूरी हो चुकी है ।

पर्दा गिरता है द्वारा : बच्चन समूह

पुस्तक समीक्षा

प्रारूप

1. पुस्तक का नाम :-

2. पुस्तक के लेखक का नाम :-

3. प्रकाशक का नाम :-

4. संस्करण :-

5. पुस्तक का मूल्य :-

6. पुस्तक के बारे में :-

7. पुस्तक से सीख :– अति संक्षिप्त रूप में

समीक्षा कर्ता का नाम

कुछ ज़रुरी बातें

- पुस्तक समीक्षा हमें पुस्तक के बारे में जानकारी देती है ।
- पुस्तक समीक्षा लिखते समय पुस्तक के कथ्य के बारे में जिज्ञासा बनी रहने दें।
- अपने आप से पुस्तक के बारे में प्रश्न पूछिए और उन्हें क्रम से लिखकर उत्तर देने का प्रयास कीजिए ।
- पुस्तक को पढ़कर मुख्य बातें लिखिए ।
- उसका प्रारूप तैयार कीजिए ।
- बताइए कि यह पुस्तक क्यों पढ़नी चाहिए।
- अपनी बात को निष्पक्ष रूप से अंतिम रूप दें ।

पुस्तक- समीक्षा

भारती शर्मा
क्र. 1 बड़ौदा

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित तथा वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध नाटक "अंधेर नगरी" तत्कालीन सामाजिक – राजनीतिक परिवेश का जीवंत दस्तावेज़ है। भारतेन्दु का साहित्यिक व्यक्तित्व अपने पूर्ववर्ती कवियों तथा परवर्ती साहित्यकारों से भिन्न था। वे जनसमान्य के साहित्यकार थे । उन्हें अपने राष्ट्र ,समाज तथा देशवासियों से सच्चा प्रेम था,अटूट लगाव था,उनकी चिंता थी। अत: उन्होंने अपने साहित्य में उन सभी शक्तियों पर प्रहार किया,उन तत्वों पर चोट की,जो समाज को विकृत कर रहे थे तथा समाज को पतन के गर्त में धकेल रहे थे। कुछ आलोचकों ने तो उन्हे आधुनिक 'कबीर"तक कहा है।

भारतेन्दु ने 'अंधेरनगरी' देश की राजनैतिक,आर्थिक,सामाजिक और धार्मिक विकृतियों एवं सांस्कृतिक संकीर्णता का सजीव चित्रण कर उन से मुक्त होने का आह्वान किया है ।छः दृश्यों वाले लगभग 20 पृष्ठों के छोटे आकार का प्रहसन 'अंधेर नगरी' में अपने युग की सामाजिक कुरीतियों एवं विकृतियों ,सांस्कृतिक विघटन,आर्थिक दुर्दशा,धार्मिक पाखंड एवं बाह्याडंबर का संकेत मात्र है , लेकिन यह इतना सशक्त एवं प्रभावशाली है कि पाठकों एवं दर्शकों को चेतना के स्तर पर झकझोर देता है। इसका उद्देश्य भारतीयों को आत्म-गौरव का बोध कराना तथा तत्कालीन कुरीतियों से मुक्त होने का उद्बोधन देना था । 'अंधेर नगरी' में सिर्फ एक पात्र (महंत) को छोड़कर शेष सब व्यावहारिक जीवन से ही लिए गए हैं । इसके पात्रों की सृष्टि यथार्थ चित्र को आँकने के लिए की गई है । 'अंधेरनगरी 'के संवादों की भाषा पात्रानुरूप ,सहज एवं सरल है ,जो पात्रों को जीवंत बनाने में सहायता करती है । जनसुलभ ,चलती हुई प्रवाहशील भाषा में शब्दावली एवं लहजा भी पात्रों के अनुरूप ही है।

इस तरह कहा जा सकता है कि 'अंधेर नगरी' भारतेन्दु जी की अद्वितीय प्रतिभा का निष्कर्ष है ,जिसे तत्कालीन समाज ,तत्कालीन हिन्दी साहित्य एवं तत्कालीन साहित्यकारों की दृष्टि को जानने में रुचि रखने वालों को अवश्य पढ़ना चाहिए।

पुस्तक समीक्षा

लेख राज मीणा
के वि उत्तरलाई जयपुर

पुस्तक का नाम – गोदान लेखक – मुंशी प्रेमचंद
प्रकाशक – वाणी प्रकाशन पृष्ठ संख्या – 244

मैंने मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा उपन्यास 'गोदान'पढ़ा, जिसमें नायक होरी आसामी होता है तथा उसकी पत्नी धनियां खेती-बाड़ी में उसकी मदद करती है। धनिया को एक विरोधी नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है जबकि नायक होरी बिना किसी बात के विरोध किए समाज के उच्च वर्गों द्वारा कही जाने वाली बातों को स्वीकार करता है। इस प्रकार वह खेतीहर मजदूर बन जाता है। इसके विपरीत गोबर गांव में काम करके पिसना नहीं चाहता है। वह नहीं चाहता है कि परिश्रम वह करे और खाए कोई और।वह युवावर्ग का प्रतिनिधि

प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में महिलाओं की स्थिति का वर्णन किया है जिसमें विधवा विवाह , दहेज प्रथा आदि को उजागर किया गया है। इसमें मिस मालती जैसी महिलाएं भी दिखाई गई हैं जो दूसरों की सेवा में तत्पर रहती हैं और फिलोसफर की तरह जिंदगी व्यतीत करना चाहती है। यह उस समाज की पढ़ी- लिखी महिला है जो अपने परिवार का भरण- पोषण करती है। यह लखनऊ की प्रसिद्ध डाॅक्टर है। वह आधुनिक बातों को मानने वाली महिला है। इसके विपरीत मिसेज खन्ना जो कविताएं रचती है तथा घर के सारे बंधनों से बंधी है। भोग-विलास के साम्राज्य में रहकर भी उन्हें भोग- विलास तनिक भी न छू पाया है। वह एक त्यागी तथा आदर्श महिला है। मिस खन्ना बेहद कंजूस है। उन दोनों में कोई बात नहीं पटती क्योंकि मिस खन्ना पूरी तरह भोग-विलास में डूबे हुए व्यक्ति हैं। मिस्टर मेहता एक फिलास्फर व्यक्ति हैं जो प्रसिद्ध डाॅक्टर भी हैं। वे अपने पैसे को लोगों की सेवा में अर्पित करते हैं तथा समाज के बंधनों से मुक्त किताबी कीड़े हैं अर्थात पुस्तकों का पीछा नहीं छोड़ना चाहते हैं। ये शहर के जीवन को दर्शाते हैं। इस प्रकार यह रचना काफी रोचक है।

मेरे विचार से इसमें धनिया काफी हद तक सही होती है। यदि होरी की जगह धनिया कर चुकाने जाती तथा लोगों के सामने बेझिझक बात रखने का उसमें जो साहस है , उसे होरी नहीं दबाता तो शायद वह खेतीहर मजदूरी करने और इस प्रकार के ऋणों में डूबने से मुक्त रहते। यह उपन्यास यह प्रेरणा देता है कि लोगों का सीधापन ही उनके पतन का कारण बनता है। हमें अपने हितों की रक्षा के लिए विरोध करना भी आना चाहिए, होरी बेवजह ही ऋण चुकाता था।

जब गोबर ने (जो वर्तमान प्रगतिवादी विचार रखने वाले युवा का प्रतीक कहा जा सकता है) ने किसी विधवा स्त्री से शादी कर ली यह कोई गलत कार्य नहीं था। होरी भी इससे सहमत था लेकिन महाजनों के कहने पर बिरादरी के भय से उसने अपने घर को ही दांव में लगा लिया। इसी तरह भोला की गाय 80 रुपए की थी जबकि होरी के बैल 300 रुपए के थे। गांव वाले उसके साथ थे फिर भी उसने बैलों को ले जाने से नहीं रोका। यह सब उसके सीधेपन का ही परिणाम था। इस वजह से होरी के घर में चूल्हा भी नहीं जलता। यह बहुत बड़ी दीनता थी। आज भी हमारे समाज में ऐसे लोग व्याप्त हैं। उन्हें इससे सीख लेनी चाहिए।

होरी के महाजन उससे व अन्य गांव वालों से प्रत्यक्ष रूप से कर लेते थे लेकिन उनकी बिरादरी अप्रत्यक्ष रूप से लूटते थे ,इस प्रकार किसान अधिक गरीबी में डूबते थे जिससे उनका चूल्हा भी नहीं जल पाता था लेकिन वे कोल्हू के बैलों की तरह पिसते रहते हैं। यह उपन्यास हमें शोषण का विरोध करने का साहस देता है।

उपयोगी साहित्यिक बेबसाईट

1. http://nroer.gov.in/home/repository
2. http://epathshala.nic.in/hi/
3. www.download.com
4. www.google.com
5. www.foldermarker.com
6. www.webdunia.com
7. www.holy-statues.com
8. www.hindinest.com
9. www.anubhuti-hindi.org
10. www.abhivyakti-hindi.org
11. http://wwwsamvedan.blogspot.com
12. http://www.indianrail.gov.in/index.html
13. www.rachanakar.blogspot.com
14. www.computechpub.com
15. www.desktopvidep.about.com
16. www.technorati.com
17. www.sahityakunj.net
18. www.teachersdomain.org
19. www.thisismyindia.com
20. www.mathforum.org
21. www.nirantar.org
22. www.blogger.com
23. www.hindiwriter.org
24. www.bbc.co.uk/hindi
25. www.sakshat.ac.in
26. www.sakshat.ignou.ac.in
27. www.incometaxindia.gov.in
28. www.pitra.com
29. www.education-world.com

30. www.guru.net.edu
31. www.kidsites.org
32. www.bartleyby.com
33. www.newdelhi.usembassy.gov
34. editorspan@state.gov
35. www.dilkedarmiyan.blogspot.com
36. www.south-asia.com/embassy-India
37. www.careerlauncher.com
38. www.rajbhasha.nic.in
39. www.hunkinsexperiments.com
40. www.presidentofindia.nic.in
41. www.freetranslation.com
42. http://www.kavitakosh.org/
43. http://www.udanti.com/
44. www.lekhni.net
45. http://hindihaiku.wordpress.com/
46. http://trivenni.blogspot.com/
47. www.kathakram.in
48. http://www.garbhanal.com/
49. http://yugchetna.blogspot.com/
50. http://lamhon-ka-safar.blogspot.com/
51. http://aviramsahitya.blogspot.com/
52. http://www.hindisamay.com/

गतिविधियाँ

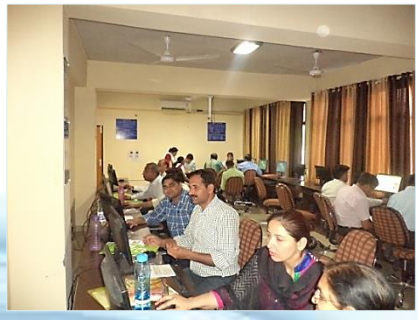

कें.वि.सं.शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान, सैक्टर - 33 सी , चंडीगढ़

सेवाकालीन प्रशिक्षण स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) प्रथम चरण

17.05.2017 - 28.05.2017

बाएँ से दाएँ (बैठे हुए) – श्री/श्रीमती/सुश्री- एसपी सिंह, शशि कोहली, एस के भटकल, रमा रानी, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता(संसाधक), डॉ. संध्या शर्मा(कोर्स निदेशक), श्री रनबीर सिंह(उपायुक्त एवं निदेशक), श्री सुरेश कुमार(सह कोर्स निदेशक), श्रीमती सुनीता गुसांई(संसाधिका), एचआर शर्मा, आर सी पोद्दार, नीलम सरीन,

बाएँ से दाएँ (पहली पंक्ति में खड़े हुए)- भारती शर्मा ,अनुजा राय, सीमा शुक्ला,वसुंधरा ढूंडले, सुमन जायसवाल, कुसुमलता, अनीता गुप्ता, उर्मिला दीप , रंजीत कुमार, पदमनाभ जोशी,रमेश चन्द्र , पी सी विश्वकर्मा, आनंद स्वरूप, सुरेश चंद्र बैरवा, अग्रचंद, अशोक कुमार, मनोहर लाल, मधु मंजरी, रीता देवी,वीना सिंह, कंचन, मीनू बाला

बाएँ से दाएँ (दूसरी पंक्ति में खड़े हुए)- पंकज कपूर, अर्चना सिंह दांगी ,शिवलता सोलंकी, रजनी मिश्रा, तारा जोशी ,आरती भण्डारी, रघुबीर प्रसाद, सीताराम जाट, लेखराज मीणा, विजय कुमार, राधाचरण

बाएँ से दाएँ (तीसरी पंक्ति में खड़े हुए)- राजीव कुमार स्वामी, श्रीरंजन द्विवेदी, मुकेश कायल, सुरेश कुमार पाटीदार,के सी शुक्ला, एम स्वरूप, त्रिभुवन सिंह, वी के पांडेय, संजय कुमार शुक्ल, जोगिंदर पाल डोगरा